लेखक परिचय

अरविन्द कुमार यादव 'पप्पू' का जन्म नानी के घर क्वार (आश्विन) के नवरात्रि में गुरूवार के दिन गोधूलि बेला में बाढ़ के वर्ष हुआ था, किन्तु विद्यालय में नामकरण के समय प्राथमिक गुरूजन ने जन्म तिथि 01 जुलाई 1979 अंकित किया है। निवासी ग्राम–गढ़ासेनी, पोस्ट–नौपेड़वा, जिला–जौनपुर (उ.प्र.) 222109, पिता श्री राजबहादुर यादव 'किसान', माता– श्रीमती करमा देवी 'गृहणी', पत्नी– श्रीमती सरिता यादव एवं दो पुत्र अंश यादव, अनमोल यादव भविष्य की आशा, विश्वास और जीवन एहसास के प्रतिरूप है। गाँव में पले–बढ़े, पढ़े–लिखे प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा प्राप्त किये, बी.ए. एवं एम.ए. (अर्थशास्त्र) स्मृतिशेष राजपति यादव, मामा के घर ऊदपुर–घाटमपुर, बदलापुर, जौनपुर (उ.प्र.) में रहकर उत्तीर्ण किया। तत्पश्चात् बी.एड., एम.एड., एमफिल, पीएचडी, यूजीसी नेट परीक्षा शिक्षा विषय से इलाहाबाद में अपने शैक्षिक पूनर्जन्मदाता गुरुजी श्री रायसाहब यादव (सेवानिवृत्त जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, जिला लोकपाल अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड) एवं गुरुमाँ स्मृतिशेष मनोरमा देवी के शरण में आठ वर्ष नि:शुल्क संरक्षण, निर्देशन एवं मार्गदर्शन प्राप्त कर किया है। जौनपुर के शिक्षक शिक्षाविद् श्री रामजनक यादव के सहयोग से सन् 2006 में कुछ माह गन्ना कृषक पी.जी. कालेज, ताखा, शाहगंज, जौनपुर के बी.ए. संकाय में अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। जहां प्रो. राकेश कुमार यादव संरक्षण प्रदान कर अध्यापन के साथ–साथ अध्ययन करने को प्रेरित किया। सन् 2007 से 2014 तक वेदान्त कालेज ऑफ एजुकेशन, गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़ (उ.प्र.) के बी.एड. संकाय में व्याख्याता पद पर तथा 2015 से 2017 तक रामबरन सिंह शिक्षण संस्थान चोरहां, बरईपार, जौनपुर (उ.प्र.) में प्राचार्य पद पर कार्य किया।

वर्तमान समय में 21 अगस्त 2017 से गौतम बुद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, हजारीबाग (झारखण्ड) में प्राचार्य पद पर कार्यरत हैं। समाज में शैक्षिक, सामाजिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक, नैतिक एवं पर्यावरणीय जागरुकता के लिए विचार–लेखन, प्रचार–प्रसार व सेवा–सत्कार के लिए खुद का समर्पण किया है। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्र–पत्रिकाओं, सेमिनार आदि में लेख, सम्पादकीय आदि प्रकाशित होना लेखन के लिए प्रेरणास्रोत है।

प्रमुख पत्रिका एवं पुस्तकें:-

- पहल स्मृति पत्रिका एवं इडुनिक बुलेटिन (**Journal**) के सम्पादक
- पक्ऊई बखरी, गढ़ासेनी ('पितामह' रामनरेश यादव)
- शिक्षाशास्त्र: समग्र अध्ययन
- शिक्षाशास्त्र: वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक
- संस्कारों की ओर लौटो
- बाल विकास एवं शिक्षा–विज्ञान
- शिक्षा का मनोवैज्ञानिक आधार
- बाल्यावस्था एवं उसका विकास
- समसामयीक भारत एवं शिक्षा
- शिक्षण एवं अधिगम
- योग शिक्षा (प्रकाशनाधीन)
- समाज शिक्षा (प्रकाशनाधीन)

डॉ. अरविन्द कुमार यादव 'पप्पू'

एम.ए. (अर्थशास्त्र), बी.एड., एम.एड. (एप्लाइड),
यूपी–टेट, सी–टेट, यूजीसी–नेट, एमफिल., पीएचडी (शिक्षा)
प्राचार्य
गौतम बुद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
हजारीबाग, झारखण्ड–825301

इडुनिक बुलेटिन
Edunic Bulletin

(A Multidisciplinary National Journal)

PUBLISHED BY

Edunic Publication Publisher and Distributor

Naiganj, Jaunpur (U.P.)

Regd. No.: UPSA65005108

ISSN : Proposed

EDITOR IN CHIEF

Dr. Arvind Kumar Yadav

Principal

Gautam Buddha Techers' Training College

Hazaribag, Jharkhand

ASSOCIATE EDITOR IN CHIEF

Dr. Shashikant Yadav

Principal

S.B.M. Teachers Training College, Hazaribag, Jharkhand

Dr. Umendra Singh

Assistant Professor, Deptepartment of Education

Dharm Samaj College, Aligarth (U.P.)

EDITOR

Dr. Rajesh Kumar Yadav

Principal

Ravi Mahto Smarak Teachers Training College, Mahuda

Dhanbad (Jharkhand)

Dr. Somendra Singh

Assistant Professor, Dept. of Education

Government Raza P.G. College, Rampur (U.P.)

MANAGED BY

Mr. Rajkumar Yadav & Smt. Sarita Devi

(Member of the Edunic Publication Publisher and Distributor)

Typing & Setting : Mr. Yogesh Chandra Rai

Harsh Offset Press, Jaunpur (U.P.)-222002

इडुनिक बुलेटिन (Edunic Bulletin)

(A Multidisciplinary National Journal)

MEMBERS OF EDITORIAL BOARD

- **Prof. (Dr.) Rakesh Kumar Yadav,** Dept. of History, Ex. NSS Co-ordinator, VBSPU, Jaunpur
  GSPG College, Samodpur, Jaunpur, (Uttar Pradesh)
- **Prof. (Dr.) Sunil Kumar Sain,** Dept. of Education
  Guru Ghasidas Central University, Raipur (Chhatishagarh)
- **Prof. (Dr.) Ajay Kumar Chaturvedi,** Dean, Social Science
  IEC University, Baddi, Solan, (Himachal Pradesh)
- **Prof. (Dr.) Chetlal Prasad,** Principal
  Maa Vidhyawasani Teachers Training College, Padma, Hajaribag, (Jharkhand)
- **Dr. Ram Prakash,** Assistant Prof. Dept. of Explanation Study
  Mahatma Gandhi Anterrastriya Hindi Vishwavidhyalaya, Vardha (Gujrat)
- **Dr. Lala Ratnakar,** Artist, Ex. HOD
  MMH College, Gajiyabad (Uttar Pradesh)
- **Capt. (Dr.) Bijaya Raj Yadav,** Senior Lecturer & NCC Officer
  Agrashen Inter College, Prayagraj, (Uttar Pradesh)
- **Dr. Santosh Kumar Yadav,** Senior Lecturer, Hindi
  Jawahar Navoday Vidhyalay, Sindhudurg, (Maharastra)
- **Dr. Mukesh Kumar Yadav,** HOD B.P.Ed. Department
  R.V. Higher Edu. & Tech. Institute, G.B. Nagar, (Uttar Pradesh)
- **Dr. Anju Kumari,** Assistant Prof. Dept. of Sociology
  Mukta Prasad P.G. College, Shahi, Bareilli, (Uttar Pradesh)
- **Dr. Sunil Kumar Chaturvedi,** Principal
  DMM Teachers Training College, Banaso, Hajaribag, (Jharkhand)
- **Dr. Sarad Kumar Yadav,** Assistant Prof. Dept. of Education
  A.N.D. College, Sahapur, Samstipur, (Bihar)
- **Dr. Shradha Mishra,** Principal
  Sarswati Shiksha Mahavidhyaly, Samuja, (Chhatishgarh)
- **Dr. Naved Ahmad Khan,** Assistant Prof. Dept. of Urdu
  MGM PG College, Sambhal, (Uttar Pradesh)
- **Dr. Shiv Kumar Rana,** Principal
  Dr. S. Radhakrishanan Teachers Training College, Lari, Ramgarh (Jharkhand)

इडुनिक बुलेटिन (Edunic Bulletin)

(A Multidisciplinary National Journal)

विषय सूची	पृष्ठ संख्या
1. शिक्षाशास्त्र के बहुआयामी अर्थों का सारगर्भित अध्ययन **डॉ. अरविन्द कुमार यादव**	4
2. किन्नर समाज की संस्कृति एवं परम्पराएं **डॉ. अंजू सिंह**	8
3. आटिज्म स्पेक्ट्रम विकार और आमतौर पर विकसित होने वाले बच्चों का एक तुलनात्मक अध्ययन : माँ बच्चे की बात–चित में प्रोफाइलिंग संचार व्यवहार **डॉ. शरद कुमार यादव**	14
4. निर्विद्यालयीयकरण एवं शिक्षा के भविष्यशास्त्र का समीक्षात्मक अध्ययन **डॉ. पुष्पा कुमारी**	25
5. शिक्षक शिक्षा में सचूना एवं संचार प्रौद्योगिकी की उपयोगिता **डॉ. शशिकांत यादव**	30
6. वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में शिक्षा के औचित्य का एक अवलोकन **डा. श्रद्धा मिश्रा**	34
7. Collaborative Learning : Coneeptard its Benefit **Dr. Umendra Singh**	38
8. Unlocking the Potential : The Future of AI in Education **Fajiya Khan**	46

शिक्षा के बहुआयामी अर्थों का सारगर्भित अध्ययन

डॉ. अरविन्द कुमार यादव

प्राचार्य

गौतम बुद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड

Email : arvindgbttc2017@gmail.com

Mob.: 9458234455, 9140500952

सारांश–

शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करती है इसके अभाव में शिशु का शिष्ट बालक, युवा, प्रौढ़ आदि बन पाना असंभव है। शिक्षा की नींव माँ की कोख से प्रारम्भ होकर जीवनपर्यन्त चलती रहती है। माँ प्रथम शिक्षिका और पिता, परिवार, पड़ोस, मित्र विद्यालय भी शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका लिखते हैं। शिक्षा बालक के जीवन का आधार होती है। शिक्षा का विकास मानव जीवन के विकासंक्रम के साथ–साथ हुआ है। जैसे–जैसे व्यक्ति की आवश्यकताएं बदली शिक्षा की आधारभूत संरचना में बदलाव किया गया। प्राचीन काल में उपनयन संस्कार से शुरू हुई शिक्षा–दीक्षा आज पूर्व प्राथमिक केन्द्रों में आधुनिक तकनीक संसाधनों से प्रारम्भ हो रही है। शिक्षा का अभिप्राय बहुयामी प्रकृति का है, प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षा के विभिन्न ऐतिहासिक अर्थों को एक सारगर्भित विश्लेषण करके व्यक्त किया गया है। शिक्षा के विभिन्न अर्थो को एक नजर में समझने–बूझने एवं चिन्तन करने में सहायक होगा।

कीवर्ड्स– मार्गान्तरोकरण, जीवन पर्यन्त, साक्षरता, प्रकटीकरण इत्यादि।

प्रस्तावना–

शिक्षा शब्द अति व्यापक है। जिसमें शिक्षण, प्रशिक्षण, निर्देशन, अनुदेशन, परामर्श इत्यादि प्रत्यय समाहित हैं। शिक्षा व्याकरण की दृष्टि से संज्ञा है तो अर्थ की दृष्टि से प्रक्रिया है। मानव शिशु जन्म से अत्यधिक असहाय होता है। उसकी यह असहायता उसके लिए वरदान है क्योंकि जो जीव जन्म से जितना अधिक असहाय होता है, वह उतना बुद्धिमान होता है। शिक्षा मानव विकास का मूलभूत साधन है जो बालक की जन्मजात शक्तियों का शोधन, विकास, परिवर्तित और मार्गान्तरीकृत करती है। पेस्टालॉजी के अनुसार ''शिक्षा हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।'' शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो बालक का सार्वभौमिक विकास करके उसे परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व का जिम्मेदार नागरिक बनाती है। भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण है कि ''शिक्षा विहीनः नर पशु तुल्य भवति'' अर्थात शिक्षा के अभाव में मनुष्य पशु के समान होता है। इस प्रकार शिक्षा समाज के प्रारम्भ से साथ–साथ अनवरत चलने वाली गतिशील प्रक्रिया के रूप में दिन–प्रतिदिन नई ऊँचाईयों को प्राप्त की है। शिक्षा के अनेकों अर्थ/सम्प्रत्यय /आशय/तात्पर्य को अग्रांकित पेज पर दिये गये आरेख से जाना समझा जा सकता है...

E = Edequette	C= Creativity	I= Integrity
D= Discipline	A= Awareness	O= Optimist
U= Universal Brotherhood	T= Transformation	N= Nobelity

इस आरेखीय विवरण से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा का अर्थ अत्यंत व्यापक है शिक्षा को समझने के लिए उसके अर्थ को समझाना जरूरी है। शिक्षा के उपर्युक्त अर्थों में से कुछ की संक्षिप्त व्याख्या अग्रांकित है–

शिक्षा शाब्दिक अर्थः–

शिक्षा के लिए अंग्रेजी शब्द Education का उद्भव लैटिन भाषा के Educatum से हुई है। जो दो अलग–अलग शब्द e तथा duco से मिलकर बना है e का अर्थ out of तथा duco का अर्थ to lead forth/to extrect out होता है अर्थात आंतरिक शक्तियों को बाहर लाना शिक्षा का शाब्दिक अर्थ है। शिक्षाविदों ने Education के उत्पत्ति के सम्बंध में अन्य लैटिन भाषा के शब्दों का भी प्रयोग किया है–

(अ) Educere का अर्थ होता है– To bring forth.

(ब) Educare का अर्थ होता है– To educate/ To raise/To bring up.

(स) Educatus का अर्थ होता है– To teach/To train.

शिक्षा का संकुचित अर्थः–

शिक्षा के संकुचित अथवा सीमित अर्थ के अनुसार बालक को स्कूल/विद्यालय/विश्वविद्यालय में प्राप्त होने वाली शिक्षा से है। जहां उसे एक निश्चित योजना के तहत निश्चित पाठ्यक्रम एक निश्चित समयावधि में उत्तीर्ण करके उपाधि प्राप्त करना होता है। इस अर्थ में बालक को विशेष प्रकार की पुस्तकों, पाठ्यक्रम एवं विषय सूची को पढ़ना शिक्षा कहलाती है। पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करके बालक को सैद्धान्तिक ज्ञान लेने में सहायता मिलती है। इस प्रकार की शिक्षा को शिक्षा न कहकर अध्यापन/ निर्देश/अनुदेशन के नाम से सम्बोधित करना ज्यादा अच्छा होगा।

शिक्षा का व्यापक अर्थः–

शिक्षा के व्यापक अर्थ के अनुसार शिक्षा आजीवन चलने वाली एक प्रक्रिया है एक व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने अनुभव एवं प्रशिक्षण के परिणाम स्वरूप जो कुछ सीखता है वह शिक्षा है। बालक अपने माता–पिता, भाई–बहन, परिवार–पड़ोस, खेल के साथी–मित्र मण्डली, स्कूल कालेज, दुकान, दफ्तर, मेला, पार्क, बाजार आदि से समय–समय पर कुछ न कुछ शिक्षा अवश्य प्राप्त करता रहता है। इस प्रकार व्यापक अर्थ में शिक्षा अति विस्तृत है। शिक्षा को विकास का नाम दिया जा सकता है।

शिक्षा का वास्तविक अर्थः–

शिक्षा का वास्तविक अर्थ के अनुसार शिक्षा एक ऐसी जन्मजात शक्ति होती है जो व्यक्ति में सार्वभौमिक विकास में योगदान करती है। बालक की जन्मजात शक्तियों का वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने में सहायता करती है। उसे जीवन का ज्ञान, नागरिकता का पाठ, स्वाभाविक विकास करके विचार, व्यवहार और दृष्टिकोण में परिवर्तन लाकर समाज, देश और विश्व के लिए योग्य व्यक्ति बनाना है।

शिक्षा का व्यवहारिक अर्थः–

शिक्षा का व्यवहारिक अर्थ मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है। मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। शिक्षा व्यवहार में परिवर्तन एवं परिमार्जन की प्रक्रिया होती है। शिक्षा जीवन की विभिन्न व्यवहारिक समस्याओं का हल ढूढ़ने में व्यक्ति की सहायता करती है। व्यवहारिक समस्यायें व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों होती है। व्यक्ति अपने पूर्व के अनुभवों को पुनर्संगठित करके व्यवहार में परिवर्तन करता रहता है। इस अर्थ में शिक्षा व्यक्ति को विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने और उससे बाहर निकलने की क्षमता पैदा करती है।

शिक्षा का विश्लेषणात्मक अर्थः–

शिक्षा का विश्लेषणात्मक अर्थ केवल छात्रों के दिये जाने वाले विषयी ज्ञान तक सीमित नहीं होता है बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षण, जीव–जन्तु, पशु–पक्षी, प्रकृति–पदार्थ आदि से प्राप्त ज्ञान को समाहित किये हुए है। बालक का सर्वांगीण विकास करने के साथ–साथ उसमें स्व–अनुशासन, प्रशिक्षण कार्यक्रम और शोध उपागम के दृष्टिकोण से समुचित मनोवृत्ति का विकास करना शिक्षा में शामिल है। शिक्षा को समस्त गुणों का प्रकटीकरण करने का कार्य करना चाहिए। जिसके बिना व्यक्ति का जीवन–यापन असम्भव होगा।

संस्कृत साहित्य के अनुसार :–

अंग्रेजी भाषा का शब्द म्कनबंजपवद का हिन्दी शाब्दिक अर्थ शिक्षा होता है। हिन्दी में शिक्षा शब्द की उत्पत्ति हिन्दी की जननी भाषा संस्कृत से हुई है। संस्कृत के 'शिक्ष्' धातु में 'अ' प्रत्यय लगने से शिक्षा शब्द बना है जिसका शाब्दिक अर्थ सीखना–सीखाना होता है।

शिक्षा के लिए संस्कृत साहित्य का 'शास्' शब्द का भी प्रयोग किया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ अनुशासन अथवा नियंत्रण होता है।

शिक्षा के लिए विद्या शब्द संस्कृति के 'विद्' शब्द से निकला हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ जानना होता है। यहां यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि विद्या और शिक्षा में अन्तर होता है। विद्या – 'वेत्ति अनया सा शिक्षा' अर्थात जिससे जाना जाये। शिक्षा – 'शिक्ष्यते अनया इति शिक्षा' अर्थात जिससे सीखा जाये।

शिक्षा का नवीनतम अर्थः–

शिक्षा के लिए वर्तमान समय में च्मकंहवहल शब्द का प्रयोग किया जाता है। Pedagogy दो शब्दों च्पकमे तथा a-gain का संयुक्त रूप है। Paides का अर्थ लड़का तथा .हंपद का अर्थ आगे बढ़ाना होता है। इस प्रकार च्मकंहवहल का अर्थ बालक को आगे बढ़ाना/प्रगति की ओर ले जाना/उन्नति करने की ओर बढ़ाना आदि होता है। इस अर्थ में शिक्षा बालक के पथ प्रदर्शन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए किया गया शिक्षण विज्ञान है।

निष्कर्ष–

शिक्षा जैविक प्राणी को सामाजिक प्राणी बनाने का प्रमुख अस्त्र–शस्त्र है। जिस प्रकार समाज से अलग होकर व्यक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती है उसी प्रकार शिक्षा के बिना व्यक्ति के सभ्य, सुसंस्कृत जीवन की कल्पना असम्भव है। यदि मुख्य ईश्वर की श्रेष्ठ कृति है तो शिक्षा ईश्वर की श्रेष्ठ कृति में नैतिक, सामाजिक, व्यवहारिक, सांस्कारिक प्राण डालने के अति आवश्यक है। शिक्षा के बहुआयामी अर्थों से शिक्षा की व्यापकता का पता चलता है तथा शिक्षा वह सब प्रक्रिया है जो एक मानव शिशु को समाज सभ्य नागरिक, सामाजिक समायोजन योग्य जीवन, परस्पर प्रेम–सद्भाव से रहने तथा जीवन मार्ग में प्रगति के अपरिहार्य है। अन्यथा इस कथन की पुष्टि होती है कि शिक्षित और अशिक्षित में उतना अन्तर है जितना की जीवित और मृत में शिक्षा की व्यापकता ही शिक्षा की आदेयता को दर्शाती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

डॉ. रामशकल पाण्डेय ( ) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आई.एस.बी.एन.– 978–81–905301–0–1
गुरूसदन दास तयागी (2013) शिक्षा के आधुनिक सामान्य सिद्धान्त, आई.एस.बी.एन.– 978–93–82355–01–4
डॉ. अरविन्द कुमार यादव (2022) शिक्षाशास्त्र समग्र अध्ययन, आई.एस.बी.एन.–
डॉ. सीताराम जायसवाल (2003) शिक्षा एवं निर्देशन और परामर्श, आई.एस.बी.एन.– 81–7457–117–5
डॉ. एस.जी. गुप्ता (2013) भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, आई.एस.बी.एन.– 81–86204–14–8
मोती लाल गुप्ता (1999) भारत में समाज, आई.एस.बी.एन.– 81–7137–292–9
डॉ. आर.ए. शर्मा (2017) विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, आई.एस.बी.एन.– 978–93–81466–61–2
प्रो. एल.के. ओड (2005) शैक्षिक प्रशासन, आई.एस.बी.एन.–81–7137–479–4
रविन्द्रनाथ मुखर्जी (2001) उच्चतर समाजशास्त्रीय सिद्धानत, आई.एस.बी.एन.– 81–7004–054–x
डॉ. रामशकल पाण्डेय (2003) शिक्षा दर्शन, आई.एस.बी.एन.– 81–7457–006–3
डॉ. सरयू प्रसाद चौबे ( ) तुलना शिक्षा, आई.एस.बी.एन.– 978–93–80011–41–7

किन्नर समाज की संस्कृति एवं परंपराएं

डॅ. अंजू सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र)
एम.पी.पी.जी. डिग्री कॉलेज, शाही, बरेली, उत्तर प्रदेश।
Email : singhanju782@gmail-com
Mob.:

सारांश–

भारतीय समाज में किन्नर समुदाय भारत का सबसे पुराना किन्नर समुदाय है। परंपरागत रूप से समाज में दो प्रकार के लिंग पाए जाते हैं... स्त्री और पुरुष। परंतु वर्तमान संदर्भ में समाज में एक तृतीय लिंग की अवधारणा भी विद्यमान है जिसे हम किन्नर कहते हैं। किन्नरों को समाज में किन्नर, हिजड़ा, उभयलिंगी, ट्रांसजेंडर, थर्ड जेंडर, तृतीय लिंगी, खुसरा, अरावनी, खोजवा, मतदा, शिरूनानगाई, पवैया, जनरवा, मंगलमुखी, लुगाई, मेहल्ला, यूनक, मौगा, छक्का, आदि नामों से पुकारा जाता है। आज भी किन्नर समुदाय समाज की मुख्य धारा से अलग है जिसके कारण उनकी स्थिति अत्यंत दयनीय एवं विचारणीय हैं। समाज में किन्नरों को अत्यंत हेय दृष्टि से देखा जाता है। लोग इन्हें देखकर बचने का प्रयास करते हैं और इन्हें हंसी का पात्र समझते हैं। किन्नर समुदाय समाज में उपस्थित होकर भी समाज से अलग–थलग हैं। ना तो उन्हें सामाजिक रूप से कोई सहयोग प्राप्त है और ना ही सरकारी योजनाओं का कोई लाभ प्राप्त होता है। यदि प्राप्त भी होता है तो वह अंश मात्र होता है जिससे इनका कल्याण होना संभव नहीं है। किन्नर समाज अपनी विशिष्ट संस्कृति एवं परंपराओं के लिए जाने जाते हैं। किन्नर समाज सामाजिक संस्कृति, समाज एवं परंपराओं से अलग रहते हैं इसीलिए किन्नर समाज की अपनी अलग संस्कृति एवं परंपराएं होती हैं जिसका विश्लेषण प्रस्तुत शोध पत्र में किया जा रहा है।

कीवर्ड्स– किन्नर, परंपराएं, संस्कृति, हेय दृष्टि, विचारणीय, उपहास, अलग–थलग।

प्रस्तावना–

भारतीय परिप्रेक्ष्य में किन्नर समुदाय की परिकल्पना शारीरिक रूप से अल्प और सांस्कृतिक रूप से अधिक पाई जाती है। किन्नर समुदाय की संस्कृति के संबंध में 'लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी' ने किन्नर समाज की सांस्कृतिक परिभाषा कुछ इस प्रकार दी है–''भ्परतें तम जीम वसकमेज मजीदपब– कंदहमदकमक बवउउनदपजल वप्दिकपं''.1 भारत में सांस्कृतिक स्तर पर भी क्षेत्रीय दृष्टि से किन्नरों की संस्कृति में भी विविधता पाई जाती है। उत्तर भारत में उनकी जीविका के अनुसार इन्हें 'लिंग' , 'किन्नर' व 'कोटि' नाम से सम्बोधित किया जाता है। दक्षिण भारत में 'अरावली' और 'हिजड़ा' कहा जाता है। पूरब में इस समुदाय को लोक नृत्य मंच पर 'भांड मौसी' और 'लौंडा नाच' आदि नाम से भी जाना जाता है और पश्चिमी भारत में 'बयल्ला' , 'नाच्या' व 'हिजडा' आदि नामों से जानते हैं। किन्नर समुदाय भारत के सभी क्षेत्रों में

फैले हुए हैं और इनकी संस्कृति व परंपरा भी अनूठी है। 'सेरेना नंदा' ने अपनी पुस्तक 'नाइदर मैन एंड वूमेन' की भूमिका में लिखा है कि ''पश्चिम में उनके प्रति डर रहा है और पूर्व में उनके प्रति सहिष्णुता रही है।''2

'किन्नर' शब्द दो शब्दों से मिलकर से बना है किम् नर = किन्नर, अर्थात विकृत पुरुष, पुराणोक्त पुरुष, जिसका सिर घोड़े का हो तथा शेष शरीर मनुष्य का हो। नर को इस संसार में पुंसत्व से युक्त माना गया है तथा किम् का शब्दार्थ हुआ– 'क्या वह भी नर है'? जिसके पुंसत्व पर प्रश्नचिन्ह है। इसी अवधारणा से समाज में 'किन्नर' शब्द प्रचलित हुआ। 'किन्नर' शब्द का देश में प्रचलित अर्थ देखें तो यह हिमालय में निवास करने वाले वह पहाड़ी लोग हैं जिनकी भाषा कनोरी, गलचा, लाहौली आदि बोलियों के परिवार की है। यह वह वर्ग है जो पूर्ण रूप से ना तो स्त्री है और ना ही पूर्ण रूप से पुरुष।3

समाज में किन्नरों के लिए अंग्रेजी में 'ट्रांसजेंडर' या 'थर्ड जेंडर' यह दो शब्द प्रचलित हैं लेकिन 'लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी' के लंबे संघर्ष के परिणामस्वरुप 2014 में किन्नरों को 'तीसरे लिंग' के रूप में मान्यता प्राप्त हुई थी4। 15 अप्रैल 2014 को सुप्रीम कोर्ट द्वारा पारित हुआ 'नालसा जजमेंट' किन्नर समुदाय की दशा और दिशा सुधारने के लिए एक ऐतिहासिक फैसला माना गया है। इस फैसले के बाद किन्नर समुदाय को पहली बार 'तीसरे लिंग' के रुप में पहचान मिली। किन्नर चाहे किसी भी धर्म या जाति का हो, वह सब कुछ छोड़कर देवी 'बहुचरा माता' की आराधना करता है क्योंकि वह उनकी 'आराध्य देवी' हैं और वह इन्हीं की पूजा–अर्चना करते हैं। 'बहुचरा माता' का मंदिर 'गुजरात' में है। एक किवदंती के अनुसार, बहुचरा माता की तीन अन्य बहने हैं– 'नीलिमा', 'मानसा' और 'हंसा'। सबसे बड़ी बहन 'बहुचरा' किन्नर बन गई तो उन्होंने अपनी बहनों को भी अपने जैसा बना लिया। इन तीनों बहनों की संताने नहीं थी तो इन्होंने एक लड़के को गोद ले लिया। आज बहुचरा माता के मंदिर में निसंतान दंपत्ति संतान मांगने के लिए आते हैं। इसी आधार पर किन्नर समुदाय को चार वर्गों में विभाजित किया जाता है जैसे– बुचरा, नीलिमा, मानसा और हंसा।5

भारत में किन्नरों को सामाजिक तौर पर सदैव ही बहिष्कृत किया जाता रहा है उन्हें समाज से अलग–अलग रखा गया है। इसका मुख्य कारण यह है कि उन्हें ना तो पुरुषों की संज्ञा दी गई है और ना ही महिलाओं की श्रेणी। जो समाज में लिंग के आधार पर विभाजन की पुरानी व्यवस्था का अंग है। यही उनके सामाजिक बहिष्कार और उनके साथ होने वाले अत्याचारों का प्रमुख कारण है। इसका नतीजा यह है कि वह शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते हैं और बेरोजगार ही रहते हैं। उन्हें अपनी आजीविका को चलाने एवं भरण–पोषण हेतु भीख मांगना, नाच–गाना, मनोरंजन और अंत में देह व्यापार ही विकल्प दिखाई देता है। सामान्य लोगों के लिए तो सभी तरह की सुविधाएं उपलब्ध है परंतु उनके लिए तो किसी भी तरह की कोई चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं है। समाज के लोगों द्वारा ही किन्नरों को समाज से बाहर निष्कासित किया गया है जिसका दुष्परिणाम यह पीढ़ी दर पीढ़ी भुगतते आ रहे हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 4.9 लाख किन्नर हैं जिसमें से 1,37000 किन्नर उत्तर प्रदेश में है जो अन्य राज्यों की अपेक्षा सर्वाधिक हैं। वहीं किन्नरों की संख्या के मामले में बिहार दूसरे स्थान पर तथा पश्चिम बंगाल तीसरे स्थान पर है।

उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध– पत्र में 'किन्नर समाज की संस्कृति एवं परंपराओं' के संबंध में ज्ञान प्राप्त किया गया है।

क्रिया विधि :– प्रस्तुत शोध–पत्र वर्णनात्मक प्रकृति का है जिसमें विभिन्न पुस्तकों, ग्रंथों, एवं पत्र–पत्रिकाओं द्वारा प्राप्त दितीयक सामग्री का प्रयोग किया गया है।

किन्नर समाज की संस्कृति एवं परंपरा :–

किन्नर समुदाय में 'किन्नर बालक' का प्रवेश दो प्रकार से होता है। एक प्रकार यह है कि किन्नर बच्चे का परिवार अपने यहां उत्पन्न संतान को स्वयं किन्नर समुदाय को समर्पित कर देता है और दूसरा प्रकार यह है कि किन्नर जब बधाई देने जाते हैं और उन्हें किन्नर बच्चा मिल जाता है तो वह किन्नर बच्चे को अपने साथ ले आते हैं और अपने समुदाय में शामिल कर लेते हैं। जब किन्नर बच्चे की शारीरिक बनावट सामान्य बच्चों से अलग होने लगती है तो वह किशोरावस्था में स्वयं ही किन्नर समुदाय में शामिल हो जाता है। किन्नर समुदाय में नए सदस्य को प्रवेश से पहले गुरु का चुनाव करना पड़ता है। उसी के अनुसार वह सभी रीति –रिवाजों एवं परंपराओं का अनुसरण करता है। किन्नर लोग उस बच्चे को दुल्हन की तरह तैयार करते हैं। इस अवसर को किन्नर लोग एक त्योहार की तरह पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं और वह बालक अपना पूरा जीवन इस गुरु की देखरेख में खुशी–खुशी व्यतीत करता है।

परिवार और समाज के लोग किन्नरों को हमेशा उपेक्षा एवं हीनता की दृष्टि से देखते हैं तथा अपने परिवार से बहिष्कृत कर देते हैं। किन्नर समाज को अपने परिवार पर विश्वास नहीं होता है। यह अपने गुरु को ही सबसे अधिक महत्व देते हैं। गुरु को माता–पिता के जैसा सम्मान देते हैं। इनमें बेटी, मां, नानी, परनानी आदि रिश्ते भी होते हैं। गुरु की प्रतिष्ठा ही इनका परम उद्देश्य होता है। अगर गुरु की मृत्यु हो जाए तो यह अन्य गुरु चुनने के लिए स्वतंत्र होते हैं। किन्नर समुदाय में कुल 7 घराने होते हैं जिनमें हर घराने का एक 'मुखिया' होता है जिसे 'नायक' कहते हैं। किसी आवश्यक निर्णय हेतु सभी 'नायक' एकत्रित होकर सर्वमान्य निर्णय को ही प्राथमिकता देते हैं। सभी नायक जब एकत्रित होते हैं तो उसे 'जमात' कहा जाता है हर घराने के मुखिया के लिए एक 'गुरु का चयन' किया जाता है जिससे किन्नर शादी करते हैं उन्हें 'गिरिया' कहा जाता है।7

किन्नर लोग सदैव चटकीले रंगों वाले वस्त्र एवं भारी भरकम आभूषण पहनना पसंद करते हैं। डार्क मेकअप करना उनकी पहली पसंद होता है। यह स्वयं को मेकअप द्वारा इस तरह से तैयार करते हैं कि समाज के लोगों का ध्यान एवं मानसिकता उनकी तरफ आकर्षित हो। यह लोग हर बात में ताली बजाना शुभ समझते हैं इसीलिए यह बात–बात पर ताली बजाते हैं। यह लोग संगीत प्रिय होते हैं और संगीत में ही रुचि रखते हैं और संगीत के द्वारा ही अपनी आजीविका कमाते हैं और अपना भरण–पोषण भी संगीत के माध्यम से ही करते हैं यह समाज में शुभ अवसर पर ढोलक बजाकर, गाना गाकर एवं नृत्य कला के द्वारा लोगों का मनोरंजन करते हैं और उपहारस्वरूप भेंट प्राप्त करते हैं तथा परिवार को सुख समृद्धि एवं दीर्घायु का आशीर्वाद देते हैं। कभी–कभी इन्हें उपहार में इनकी इच्छा के अनुरूप भेंट नहीं मिल पाती परंतु कहीं–कहीं भेंट इतनी अधिक प्राप्त हो जाती है कि वह उनकी कल्पना से भी परे होती है। यह अपनी कमाई हुई पूंजी अपने मुखिया को सौंप देते हैं और इनका मुखिया अपनी इच्छानुसार उन लोगों पर उस

पैसे का सदुपयोग करता है।और मुखिया किसी किन्नर की बीमारी, बुढ़ापे के लिए एवं किसी दुर्घटना के लिए भी बचत करके रखता हैं।

किन्नर समुदाय में यदि किसी किन्नर की मृत्यु हो जाती है तो किन्नर लोग उस मृत शरीर को चप्पलों से मारते हुए, घसीटते हुए शमशान तक ले जाते हैं और रात में ही दफनाते हैं। किन्नर समाज का ऐसा मानना है कि यदि किसी किन्नर का अंतिम संस्कार खुश होकर किया जाएगा तो वह किन्नर योनि में दोबारा वापस आएगा। इसीलिए मृत शरीर को अधिक से अधिक प्रताड़ना देते हैं ताकि वह किन्नर योनि में दोबारा जन्म न ले और मृत किन्नर का अंतिम संस्कार भी रात में ही करते हैं ताकि किसी भी सामान्य स्त्री पुरुष की नजर उन पर ना पड़े जिसे यह अपशकुन मानते हैं।

किन्नर समाज की समस्याएं :–

वर्तमान समाज में कुछ किन्नर ऐसे भी हैं जो अपने परंपरागत पेशे को छोड़कर आत्मनिर्भर होना चाहते हैं परंतु उन्हें हमारे समाज में कोई काम नहीं दिया जाता है न ही मजदूरी का और न ही किसी ऑफिस में। आम लोगों की बात छोड़िए सरकार भी इनके विकास के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठा रही है जिससे उनके सम्मुख आर्थिक संकट की स्थिति सदैव बनी रहती है। इनके लिए चिकित्सीय सुविधा में भी भेदभाव किया जाता है। किन्नर बच्चों को किसी भी स्कूल या कॉलेज में प्रवेश नहीं दिया जाता है। यदि प्रवेश मिल भी जाए तो उनके साथ विभिन्न तरह का भेदभाव किया जाता है। उन्हें किसी से भी सम्मान, अपनापन और सहानुभूति नहीं मिलती है। किन्नरों की सर्व प्रमुख समस्या वेश्यावृत्ति में बढ़ता कदम है जो आज के दौर में समाज के लिए अभिशाप साबित हो रहा है। यह लोग परिवार और समाज के साथ नहीं रह सकते हैं उनके लिए सार्वजनिक स्थानों पर पहुंच भी प्रतिबंधित है। किन्नरों को सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में प्रभावी ढंग से सहभागिता करने हेतु अलग–थलग रखा जाता है। राजनीति और अन्य निर्णय लेने की प्रक्रिया भी उनसे कोसों दूर है। इन्हें अपने मूल नागरिक अधिकारों का प्रयोग करने में भी कठिनाई महसूस होती है। किन्नरों को अपनी गोपनीयता बनाए रखना भी सबसे बड़ी चुनौती होती है। लगातार उपेक्षित और शोषित होने के कारण किन्नर समाज मानसिक रूप से कुंठित हो जाते हैं।

सुझाव :–

'किन्नर समुदाय की दशा में सुधार करने हेतु सर्वप्रथम उन्हें परिवार से प्यार और स्नेह की आवश्यकता है।

'परिवार द्वारा किन्नरों को अपनाने की आवश्यकता है।

'परिवार द्वारा किन्नरों को शिक्षित करने हेतु विशेष कदम उठाए जाने की आवश्यकता है क्योंकि समाज और किन्नरों के बीच की खाई को खत्म करने के लिए शिक्षा, प्रगतिशील सोच जैसे सेतु की आवश्यकता है।

'किन्नरों के लिए नवोदय विद्यालयों की तर्ज पर हजारों विद्यालय खोलने की आवश्यकता है क्योंकि हमारा संविधान भी उन्हें बराबरी का और पूर्ण शिक्षा हासिल करने का अधिकार देता है जिससे वह पढ़ लिखकर अपनी जिंदगी संवार सकते हैं और देश की तरक्की में अपना योगदान दे सकते हैं।

'सरकार को जनहित में जारी विज्ञापनों की मदद से किन्नरों के प्रति समाज में जागरूकता

का प्रचार–प्रसार करना जरूरी है जिससे लोगों के मन में किन्नर समुदाय को लेकर जो पूर्वाग्रह,घृणा और दकियानूसी सोच घर कर गई है वह दूर हो सके।

'मानवाधिकार आयोग तथा अन्य सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं को इस दिशा में आवश्यक कदम उठाने चाहिए।

'किन्नर समाज भी देश के विकास में अपना योगदान प्रदान कर सकते हैं परंतु इसके लिए उन्हें वह सभी अवसर प्रदान करने होंगे जो एक सामान्य स्त्री और पुरुष को प्राप्त होते हैं और समाज को भी अपनी मानसिकता में परिवर्तन करना होगा ताकि यह समाज में सम्मान से अपना जीवन व्यतीत कर सकें।

'हमारे देश के 'माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी' ने 'स्किल डेवलपमेंट मेक इन इंडिया' कैंपेन जैसे कार्यक्रमों की शुरुआत की है। भारत सरकार द्वारा किन्नर समुदाय के लिए विशेष ट्रेनिंग देकर भी उन्हें स्किल डेवलपमेंट और मेक इन इंडिया जैसे कार्यक्रमों का हिस्सा बनाने की आवश्यकता है।

'किन्नरों की परिवार में ही पालन–पोषण की व्यवस्था हो परिवार से इनका परित्याग न किया जाए।

'किन्नरों को सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि कार्य करने की स्वीकृति हो।

किन्नर समाज भी स्वयं को समाज में स्थापित करने हेतु आधिकाधिक शिक्षा ग्रहण करें। गायन, वादन और नृत्य कलाओं में पारंगत होकर इनसे आजीविका एवं आय का अर्जन करें। बच्चों के जन्म, शादी–विवाह एवं खुशी के अवसर पर प्रभु प्रदत्त रूपी वरदान की धन से तुलना ना करें और धन देने की अनावश्यक जिद ना करें विकट परिस्थितियों में भी अपना धैर्य और आत्मविश्वास बनाए रखें और अधिक से अधिक शिक्षा ग्रहण कर आत्मनिर्भर बनने की कोशिश करें।

निष्कर्ष :–

अंत में निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि किन्नर समुदाय समाज के द्वारा ही परित्यक्त वह प्राणी है जो सामाजिकता के अभाव में पशु समान प्रवृत्ति का बन गया है जिसके लिए अंतोगत्वा कहीं–न–कहीं परिवार और समाज ही उत्तरदाई है। समाज से पृथक होने के कारण ही उनकी अपनी पृथक संस्कृति एवं परंपराएं हैं जो सभ्य समाज की संस्कृति एवं परंपराओं से भिन्न है। जहां शिक्षा एवं संस्कारों का अभाव होता है और जिस संस्कृति में शिक्षा एवं संस्कारों का अभाव रहेगा उसे संस्कृति में पल्लवित बालक भी वैसा ही अशिक्षित और संस्कारहीन होगा। समाज के द्वारा उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है और उन्हें उपहास का पात्र समझा जाता है। समाज ही उन्हें वेश्यावृत्ति करने हेतु प्रेरित करता है। समाज ही किन्नरों से अपनी शारीरिक एवं मानसिक आवश्यकताएं पूरी करने के उपरांत उन्हें ही बदनाम करता है। यदि समाज का व्यवहार एवं मानसिकता किन्नरों के लिए हितकारी हो तो किन्नर भी समाज के उपयोगी सदस्य बन सकते हैं और राष्ट्र के विकास में अपना योगदान प्रदान कर सकते हैं।

संदर्भ सूची :–

Same & love in India Edi- Ruth Vanita and Saleem kidwai] St- Martins press p- 110 - https%//www-ibanet-org-

सनोज पी., जीम. एम. डॉ. फातिमा, (2022), ''21वीं शती की हिंदी कहानियों में किन्नर विमर्श'', शोध प्रबंध, हिंदी विभाग, कालीकट, विश्वविद्यालय, पृष्ठ संख्या – 74–76।

https%//judis-nic-in/superemecourt/imgs1-aspÛ\ filename¾41411

डॉ. अहमद इकरार, (2017) ''किन्नर विमर्श : साहित्य के आईने में'', वांग्मय बुक्स, अलीगढ़, पृष्ठ संख्या 25।

सिंह, डॉ. अंजू , ''किन्नर समुदाय का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और वर्तमान स्थितिः एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण'', जनवरी (2018), शोध दृष्टि, यूजीसी अप्रूव्ड जर्नल नंबर – 49321, अवस. 9, दव. 2, पृष्ठ संख्या 227।

सनोज पी., जीम. एम. डॉ. फातिमा, ''इक्कीसवीं शती की हिंदी कहानियों में किन्नर विमर्श'', शोधग्रंथ, (2022), हिंदी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय,पृष्ठ संख्या– 104–105।

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार और आमतौर पर विकसित होने वाले बच्चों का एक तुलनात्मक अध्ययन : माँ–बच्चे की बातचीत में प्रोफाइलिंग संचार व्यवहार

डा. शरद कुमार यादव
सहायक आचार्य
बी. एड. विभाग,
ए० एन. डी. कालेज शाहपुर पटोरी समस्तीपुर (बिहार)
Email : skyad1982@gmail.com
Mob.: 9838424199, 7307666105

सारांश–

कम उम्र से ही, पर्यावरणीय प्रोत्साहन बच्चों के भाषा विकास को प्रभावित करने वाले पहले और सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। मुख्य देखभालकर्ता, जो आम तौर पर माता–पिता–दादा–दादी होते हैं, बच्चे का प्राकृतिक परिवेश होता है। इशारे, स्वरोच्चारण, मौखिकीकरण अंतःक्रियात्मक संचार क्रियाओं या व्यवहारों के उदाहरण हैं। इन कार्रवाइयों का एक निश्चित लक्ष्य होता है और इनका उद्देश्य किसी विशिष्ट व्यक्ति, अर्थात् संचार साझेदारों को लक्ष्य करना होता है। बाल–निर्देशित संचार से तात्पर्य देखभालकर्ताओं द्वारा छोटे बच्चों के प्रति लक्षित संचार के कार्यों से है। कई दोहराव के साथ छोटे स्वर उच्चारण, बच्चे के व्यवहार की नकल, शब्दों और वाक्यांशों के बीच लंबे समय तक रुकना, शब्दों पर अधिक ध्यान देना, उच्चारित स्वर और उच्च पिच ये सभी बच्चे–निर्देशित संचार की विशेषताएं हैं, जिन्हें अक्सर मातृभाषा के रूप में वर्णित किया जाता है।

महत्वपूर्ण शब्द :– संचार कौशल, बच्चे, ऑटिज्म आदि।

1 परिचय

अतीत में, अध्ययनों ने बच्चों द्वारा निर्देशित संचार की नियमितता और छोटे बच्चों की भाषा के विकास के बीच एक संबंध दिखाया है। पिछले कुछ वर्षों में, दुनिया भर के अध्ययनों ने माँ–बच्चे के संबंध और बाद के विकास में उन्नत भाषा पैटर्न के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध दिखाया है। इष्टतम देखभालकर्ता–बच्चे का संबंध दोनों संचार भागीदारों की ओर से संलग्न होने और प्रतिक्रिया करने की इच्छा से प्रेरित होता है। ऐसी मुठभेड़ों में, साझेदार आमतौर पर एक–दूसरे के गैर–मौखिक संकेतों को पहचानने और समझने के लिए मिलकर काम करते हैं ताकि वे परस्पर प्रतिक्रिया कर सकें और सही ढंग से प्रतिक्रिया कर सकें। समन्वय ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और भाषा का विकास पारस्परिकता और उत्तरों के बीच इस समन्वय से प्रभावित होता है। शोध के अनुसार, देखभाल करने वाले, बल्कि बच्चे भी एक निर्धारित तरीके से नहीं, बल्कि पारस्परिक रूप से नियंत्रित, गतिशील और लचीले तरीके से संलग्न होते हैं। नवजात शिशुओं से ही बच्चों में दूसरों के साथ बातचीत करने की तीव्र आवश्यकता दिखाई देती

है। अधिकांश नवजात शिशु उन संकेतों पर विशेष ध्यान देते हैं जो उन्हें भाषाई क्षमता हासिल करने में मदद करते हैं। बच्चों द्वारा निर्देशित संचार, जिसमें सकारात्मक भावना, उत्तरोत्तर विविध पिच, कम शब्द और सामग्री और अधिक दोहराव शामिल हैं, शिशुओं और छोटे बच्चों द्वारा पसंद किया जाता है। इसके अलावा संचार संबंधी व्यवहार , जैसे चेहरे के भाव, टकटकी, हावभाव, शारीरिक भाषा, मां और बच्चों के बीच की दूरी, संचार के दौरान मुद्रा, आदि, इन भाषणों और बच्चे–निर्देशित संचार के भाषा तत्वों के अलावा प्रारंभिक भाषा विकास का समर्थन करते हैं।

विकासात्मक देरी वाले बच्चों में बाल–निर्देशित संचार आम तौर पर विकासशील (टीडी) बच्चों में, माता–पिता–बच्चे के रिश्तों में संचार, समाजीकरण , भावनाओं और संज्ञानात्मक में लगभग 20 प्रतिशत भिन्नता होती है, और विकास में देरी वाले बच्चों में लगभग 30 प्रतिशत होती है (''महोनी और नाम, 2011'')। विकास संबंधी देरी वाले बच्चों की देखभाल करने वाले अक्सर ऐसे बच्चों की संचार संबंधी चुनौतियों की भरपाई के लिए विभिन्न प्रकार की सहभागिता युक्तियों का उपयोग करते हैं। किसी भी आयोजन के दौरान ये माता–पिता अपने बच्चों पर कड़ी नजर रखते हैं और उन्हें शारीरिक रूप से पकड़ना पसंद करते हैं। ऑटिज्म स्पेक्ट्रम रोग सबसे गंभीर संचार समस्याओं (एएसडी) वाली विकास संबंधी बीमारियों में से एक है। एएसडी एक जटिल विकासात्मक विकार है जो सामाजिक संपर्क, सामाजिक संपर्क और संचार कौशल में पुरानी कठिनाइयों के साथ–साथ प्रतिबंधित व्यवहारों की विशेषता है ।

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार वाले बच्चों में संचार कौशल

''ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर'' (एएसडी) से पीड़ित बच्चे गैर–मौखिक से लेकर मुखर तक विभिन्न तरीकों से संवाद करने में संघर्ष करते हैं। एएसडी वाले अधिकांश बच्चे, विशेष रूप से जो ऑटिस्टिक हैं, उनमें छोटी संयुक्त भागीदारी, संचार उद्देश्य की कमी और प्रतिबंधित इशारे दिखाई देते हैं। यहां तक कि एएसडी से पीड़ित बच्चे जो बातूनी होते हैं, उनमें व्यापक भाषा क्षमताएं सीमित होती हैं, जिसके परिणामस्वरूप संचार संबंधी समस्याएं, अनम्य रूढ़िबद्ध भाषण और खराब व्यावहारिकता होती है। एएसडी वाले बच्चे कम सामाजिक संदर्भ और प्रतिक्रिया दिखाते हैं, साथ ही खेल और बातचीत के दौरान अनुभव साझा करने के साथ–साथ समन्वित भागीदारी के मामले भी कम होते हैं। इन बच्चों की हरकतें और जवाब भी वैसे ही अप्रत्याशित और अनियमित होते हैं। एएसडी से पीड़ित सभी बच्चों के सामने सामाजिक संचार को लेकर काफी चुनौतियाँ होती हैं। उनमें से एक उपसमूह में भाषाई प्रदर्शनों की सूची भी सीमित है। इसके अलावा, ऐसे बच्चों में पूर्व–भाषाई लेकिन संवेदी कमियाँ भी होती हैं, जिससे उनके लिए सामाजिक संपर्क शुरू करना और बनाए रखना मुश्किल हो जाता है।

''विम्पोरी, हॉब्सन, विलियम्स, और नैश'' (2000) में पाया गया कि एएसडी वाले बच्चों में कम तीव्रता और बार–बार देखने की क्षमता होती है, साथ ही रेफरेंशियल टकटकी और बारी–बारी से देखने की क्षमता भी कम होती है। एएसडी से पीड़ित बच्चे तुलनीय टीडी सहपाठियों की तरह अभिनय या प्रतीकात्मक खेल में बहुत कम समय बिताते हैं। ये दृश्यमान होते हैं, विशेषकर असंरचित खेल के दौरान या ऐसी स्थितियों में जब कोई वयस्क मौजूद नहीं होता है। एएसडी

वाले बच्चों में, दिखावा खेल का विकास बाद के संचार कौशल विकास का एक और भविष्यवक्ता है । स्पष्ट बीमारी के कारण, माता–पिता–बच्चे की बातचीत पर सामान्य दबाव माता–पिता की प्रतिक्रिया के साथ–साथ असुरक्षित जुड़ाव पर हानिकारक प्रभाव डाल सकता है।

1.1 शोधपत्र का उद्देश्य

माताओं और बच्चों के संचार व्यवहार के साथ–साथ सहायक पहलुओं का प्रोफाइल और मूल्यांकन करना।

1.2 शोधपत्र के उद्देश्य

एएसडी, टीडी–सीए और टीडी–एलएल समूहों में मां–बच्चे के संबंधों के बीच निम्नलिखित कारकों की रूपरेखा तैयार की गई और उनकी तुलना की गई:

1. माताओं के मुखारविंद (उनके प्रकार और आशय)
2. माताओं में व्यावहारिक गतिविधियों (पहल और प्रतिक्रिया) का अवलोकन किया
3. बच्चों में व्यावहारिक गतिविधियों (दीक्षाएँ और उत्तर) का अवलोकन किया
4. बातचीत में भागीदारी
5. इंटरेक्शन पोजिशनिंग

2. साहित्य की समीक्षा

प्रारंभिक बच्चों में, माता–पिता–बच्चे के बीच संबंध सामान्य विकास में सहायता करते हैं (''विश्व स्वास्थ्य संगठन, 2005'')। देखभाल करना, पालन–पोषण करना और माता–पिता के साथ–साथ देखभाल करने वालों के साथ सार्थक संबंधों में भाग लेना छोटे बच्चों के पालन–पोषण के सभी महत्वपूर्ण पहलू हैं। माता–पिता की भागीदारी और बातचीत, विशेष रूप से संचार कौशल, बच्चों के सामान्य विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं (''टर्नबुल और टर्नबुल, 2001'')। आम तौर पर विकासशील (टीडी) बच्चों में संचार, सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास में भिन्नता के लिए माता–पिता–बच्चे का संपर्क 20 प्रतिशत से अधिक होता है और विकासात्मक देरी (डीडी) वाले बच्चों में लगभग 30 प्रतिशत होता है (महोनी और नाम, 2011)। माता–पिता–बच्चे के संबंधों का गतिशील चरित्र, जिसमें माता–पिता नियमित आधार पर अपने बच्चों की बदलती इच्छाओं और अपेक्षाओं के अनुरूप अपनी तकनीकों को समायोजित करते हैं, युवाओं को नई क्षमताएं सीखने में मदद करते हैं ('' हिरश–पासेक और बर्चिनल , 2006'')। इसके अलावा, माताओं के अपने बच्चों के स्वरों के मौखिक उत्तरों का शब्दावली विकास और संचार क्षमताओं के विकास पर प्रभाव पड़ता है (''गोल्डस्टीन, श्वाडे, और बोर्नस्टीन, 2009य स्मिथ, लैंड्री, और स्वांक, 2006य हटनलोचर , वासिलीवा, वॉटरफॉल, वेविया, और हेजेज , 2007'')। नीचे सूचीबद्ध शोध टीडी बच्चों और ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी) वाले बच्चों में भाषा, संचार और संबंधित कौशल विकास का गहन ज्ञान देते हैं। बाल–निर्देशित संचार की जांच।

बच्चों की शारीरिक गतिविधियों की नकल करने की क्षमता उनकी भाषा और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। टीडी शिशु छोटी उम्र से तुरंत और बाद की दोनों

स्थितियों में गतिविधियों या वस्तुओं की नकल करते हैं, उदाहरण के लिए, नौ महीने की उम्र तक बच्चे तुरंत और बाद की दोनों स्थितियों में गतिविधियों या घटनाओं की नकल कर रहे हैं (कार्वर, 1999)। इस तरह के अनुकरणीय व्यवहार युवाओं को सामाजिक अनुभव साझा करने की अनुमति देते हैं (''मेल्ट्जॉफ, 2005य ट्रेवरथेन, कोकिनकी , और फियामेंघी जूनियर, 1999'') और कई अन्य लोगों के कृत्यों और उद्देश्यों के बारे में जानते हैं (''मेल्ट्जॉफ, 2005य ट्रेवरथेन, कोकिनकी , और फियामेंघी जूनियर '') , 1999'')। (''मेल्ट्जॉफ, 2005य उजगिरिस , 1999'')। प्रारंभिक सामाजिक चित्रण नाटक में शामिल होना मुश्किल है, जो साझा ध्यान, सामाजिक रूप से पारस्परिकता और मन की क्षमताओं की अवधारणा के विकास में बाधा डालता है (''डॉसन, 1991य मेल्ट्जॉफ, 1999, 2005य रोजर्स एंड पेनिंगटन, 1991'')। छोटी उम्र से ही, टीडी बच्चे अक्सर दूसरों की नकल करते हैं। दूसरी ओर, एएसडी से पीड़ित बच्चों को वस्तुओं की नकल करने, चेहरे और शरीर के भावों की नकल करने और वस्तुओं पर गतिविधियों की नकल करने में देरी करने में महत्वपूर्ण कठिनाइयाँ होती हैं (''चार्मन, स्वेटेनहैम, बैरन–कोहेन, कॉक्स, बेयर्ड, और ड्रू, 1997य डॉसन, मेल्ट्जॉफ, ओस्टरलिंग, और रिनाल्डी, 1998य रोजर्स, बेनेटो, मैकएवॉय, और पेनिंगटन, 1996य रोजर्स, हेपबर्न, स्टैकहाउस, और वेनर, 2003य सिगमैन और अनगरर , 1984य स्टोन, ओस्ले, और लिटिलफोर्ड, 1997'')। प्रारंभिक (''डॉसन एंड एडम्स, 1984'') और बाद में एएसडी वाले बच्चों में भाषाई क्षमता नकल कौशल से संबंधित है (''चार्मन, बैरन–कोहेन, स्वेटेनहैम, बेयर्ड, कॉक्स एंड ड्रू, 2000, 2003य हेबिग , मैकडफी, और वीस्मर, 2013 य स्टोन एट अल., 1997य स्टोन एंड योडर, 2001'')। एएसडी वाले बच्चों में, 20 महीनों में सामग्री से जुड़े व्यवहारों की सहज नकल 42 महीनों में प्रतिक्रियाशील भाषा क्षमताओं से मेल खाती है (''चार्मन एट अल।, 2003'')। एएसडी वाले छोटे बच्चों में, 24 महीने में यांत्रिक नकल 48 महीने में अभिव्यंजक भाषा क्षमता की भविष्यवाणी करती है (स्टोन एंड योडर, 2001)। शोध के अनुसार, एएसडी से पीड़ित बच्चे अक्सर दूसरों के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए शब्दों या वाक्यांशों का उपयोग करके संवाद करते हैं (यानी, अनुरोध करना या विरोध करना)। वे शायद ही कभी संचार भागीदारों का ध्यान सामान्य हित की चीजों या घटनाओं की ओर निर्देशित करने या जानकारी प्रदान करने के लिए अपने संचार व्यवहार का उपयोग करते हैं (रोलिन्स, 2016)।

सिगमैन और रस्किन (1999) ने एएसडी प्लस डाउन सिंड्रोम वाले बच्चों में सामाजिक योग्यता और भाषा कौशल के निरंतर अध्ययन में प्रोटोडेक्लेरेटिव संयुक्त ध्यान क्षमताओं को सभी बच्चों के बीच प्रारंभिक भाषाई क्षमता से संबंधित पाया। शोधकर्ताओं ने अभिव्यंजक भाषा क्षमता में अल्पकालिक (एक वर्ष बाद) और दीर्घकालिक (आठ से नौ वर्ष बाद) दोनों वृद्धि को देखा। प्रारंभिक प्रोटोडेक्लरेटिव जोड़ों पर ध्यान (3–6 वर्ष की आयु) को अनुसंधान में बाद के सहकर्मी संबंधों (10–12 वर्ष की आयु) के साथ जुड़ा हुआ दिखाया गया था। निष्कर्षों से यह भी पता चला कि प्रोटोइम्परेटिव जोड़ों की ध्यान क्षमताएं प्रारंभिक भाषा क्षमताओं और भाषा कौशल को व्यक्त करने में अल्पकालिक प्रगति से जुड़ी थीं, लेकिन दीर्घकालिक सुधारों के साथ नहीं।

3. प्रक्रिया

3.1 प्रतिभागी

1. कुल संख्या. शोध में 150 माँ–बच्चे के जोड़ों ने भाग लिया। इस तरह के डायड तीन श्रेणियों में से एक से संबंधित थे, जैसा कि नीचे सूचीबद्ध है:
2. ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी) समूह (एन=50): जिन बच्चों में एएसडी की मां–बच्चे की जोड़ी है
3. टीडी–सीए समूह (एन = 50): एएसडी बच्चों की कालानुक्रमिक आयु (2–4 वर्ष) के लिए टीडी मां–बच्चे का मिलान।
4. टीडी–एलएल समूह (एन=50): भाषा कौशल के लिए एएसडी समूह के बच्चों के साथ टीडी मां–बाल संबंधों का मिलान किया गया।

3.2 अध्ययन के लिए प्रयुक्त परीक्षणों का विवरण

बचपन का ऑटिज्म रेटिंग स्केल 2 (CARS 2)

भारत में, ''चाइल्डहुड ऑटिज्म रेटिंग स्केल 2'' (''CARS 2 शॉपलर , वैन बौर्गोंडियन, वेलमैन, और लव, 2010'') एएसडी निदान के लिए अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला नैदानिक उपकरण है। यह सामाजिक संबंधों, नकल, भावनात्मक प्रतिक्रियाओं, शारीरिक भाषा, वस्तु उपयोग, परिवर्तन अनुकूलनशीलता, संवेदी उत्तेजक प्रतिक्रिया, संचार (मौखिक और गैर–मौखिक), गतिविधि स्तर आदि के संदर्भ में बच्चों के व्यवहार की जांच करता है। ग्रेडिंग विशिष्ट व्यवहार के विचलन की मात्रा पर आधारित होती है और 1 से 4 के पैमाने पर की जाती है। स्कोर 15 से 60 तक भिन्न होते हैं। एएसडी वाले बच्चों का निदान करने के लिए 30 से अधिक के स्कोर का उपयोग किया गया था। इस शोध में बच्चों के CARS 2 स्कोर 30 से 52 (''$M = 40.12\%SD = 3.53$'') के बीच थे।

डीएसएम 5 मानदंड

''अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन'' (एपीएय 2013) डीएसएम 5 मानदंड में गतिविधियों का एक सेट शामिल है जो दो श्रेणियों में विभाजित है: सामाजिक संचार और इंटरैक्शन, और सीमित, दोहराव वाले व्यवहार । एएसडी वाले बच्चे की पहचान करने के लिए, मानदंड 2–डी में व्यवहार की न्यूनतम सीमा निर्दिष्ट करते हैं।

भाषा विकास का आकलन (एएलडी)

लकन्ना , वेंकटेश और भट'' द्वारा स्थापित एक औपचारिक परीक्षण है । यह परीक्षा प्रत्येक आयु स्तर के लिए बताई गई आवश्यकताओं के आधार पर एक विशिष्ट ग्राफिक मैनुअल और सामग्री का उपयोग करके प्रशासित की गई थी। उत्तेजनाओं के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं के आधार पर, परीक्षण ने बच्चों की ग्रहणशील और अभिव्यंजक भाषा के स्तरध्उम्र के बारे में जानकारी प्रदान की।

हैनेन के संचार विकास के चरण

1. उनके इरादों और अभिव्यक्ति की भाषा क्षमताओं के आधार पर, हेनेन के संचार विकास के चरण ('' गिरोलामेटो और वीट्जमैन, 2006'') युवाओं को खोजकर्ता, संचारक, प्रथम–शब्द उपयोगकर्ता और संयोजक के रूप में वर्गीकृत करते हैं।

2. 'डिस्कवरर' का तात्पर्य 9 महीने से कम भाषाई उम्र के युवाओं से है जो उत्तेजनाओं पर प्रतिक्रिया करते हैं लेकिन बोलने का लक्ष्य नहीं रखते।

2. 'कम्यूनिकेटर' शब्द उन युवाओं को संदर्भित करता है जो 9–11 महीने की उम्र में इशारों से संचार करना चाहते थे और ऐसा करते थे।

3. 'प्रथम–शब्द उपयोगकर्ता' उन युवाओं को संदर्भित करता है जो 12 महीने की भाषा आयु के बराबर, केवल एक शब्द का उपयोग करके संचार करते हैं।

4. 'संयोजक', या युवा जो प्रारंभिक वाक्यांश बनाने के लिए दो या तीन शब्दों को जोड़ते हैं, आमतौर पर 15 महीने से अधिक उम्र के बच्चों को संदर्भित किया जाता है।

समूह विवरण

एएसडी समूह

एएसडी वाले बच्चों को वर्गीकृत करने के लिए CARS 2 और कैड 5 मानदंड का उपयोग किया गया था। ौक का पता लगाने के उद्देश्य से ब|ै परीक्षण एक मानक नैदानिक मनोवैज्ञानिक परीक्षा के भाग के रूप में किया गया था। जब वैज्ञानिक प्रयोग के लिए स्वयंसेवकों की भर्ती कर रहे थे, तो उन्होंने कैड 5 मानदंड का उपयोग किया।

3.3 मानदंड

समाविष्ट करने के मानदंड

बच्चे

- इसके अतिरिक्त, एएसडी वाले बच्चों का चयन करते समय प्रासंगिक समावेशन मानदंडों को ध्यान में रखा जा रहा है:
- बच्चे की उम्र 2 से 4 साल के बीच है।
- ऐसे बच्चे जो अभी हाल ही में पाए गए हैं और जिनकी पहले कोई जांच या हस्तक्षेप नहीं हुआ हो। निदान प्राप्त करने और अनुसंधान में नामांकित होने के बीच अधिकतम समय चार दिन था।
- सुनने के बारे में माता–पिता को कोई विशेष चिंता नहीं है और साथ ही बच्चे की स्थिति के आधार पर कंडीशनिंग प्ले ऑडियोमेट्रीधविजुअल रीइन्फोर्समेंट्स ऑडियोमेट्रीध्व्यवहारिक अवलोकन ऑडियोमेट्री का उपयोग करके 25कठभ्स के स्तर पर 500 हर्ट्ज, 1 किलोहर्ट्ज और 2 किलोहर्ट्ज पर की गई श्रवण स्क्रीनिंग में ' पास ' भी है। भागीदारी.

- संचार की एक प्रमुख भाषा के रूप में तमिल से अवगत होना मध्यम सामाजिक आर्थिक स्थिति (ऊपरी और निचले मध्यम) से संबंधित होना

माताओं

- एएसडी बच्चों की प्रमुख देखभालकर्ता
- तमिल मुख्य भाषा के रूप में
- मानसिक या तंत्रिका संबंधी मुद्दों के बारे में कोई महत्वपूर्ण स्व–रिपोर्ट की गई शिकायत नहीं

बहिष्करण की शर्त

बच्चे

बच्चों में बचपन के विघटनकारी विकार, एस्पर्जर सिंड्रोम, या रेट्ट सिंड्रोम का निदान होने की उच्च संभावना है।

बच्चों में दौरे औरध्या रोगसूचक विकार

4. विश्लेषण

तालिका 1 तीन समूहों में प्रतिभागियों की आयु

आयु	एएसडी समूह		टीडी-सीए समूह		टीडी-एलएल समूह	
	बच्चा (महीनों में)	माँ (वर्षों में)	बच्चा (महीनों में)	माता (वर्षों में)	बच्चा (महीनों में)	माता (वर्षों में)
अर्थ (एसडी)	31.16 (4.25)	32.15 (4.00)	31.51 (4.40)	29.13 (3.15)	20.18 (3.57)	28.71 (4.89)
श्रेणी	24-39	27-37	24-40	25-36	11-24	22-33

एएसडीः ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकारय टीडी–सीएः आमतौर पर विकासशील बच्चों का मिलान किया जाता है कालानुक्रमिक उम्रय टीडी–एलएलः आमतौर पर विकासशील बच्चों का भाषा स्तर से मिलान किया जाता है।

टीडी–सीएः कालानुक्रमिक उम्र की तुलना में आमतौर पर विकासशील बच्चेय टीडी–एलएलः भाषाई स्तर की तुलना में आमतौर पर विकासशील बच्चेय एएसडीः ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार।

एएसडी वाले बच्चों में भाषा के स्तर का आकलन किया जाता है।

एएसडी समूह के 50 बच्चों की भाषा की उम्र का मूल्यांकन ''भाषा विकास का आकलन'' (एएलडीय '' लकन्ना एट अल., 2008'') का उपयोग करके किया गया था और अलग–अलग

अंकों के साथ 12 से 40 महीने के बीच अलग–अलग पाया गया। एएलडी के अलावा, ऐसे बच्चों के भाषा कौशल का मूल्यांकन हेनेन के संचार विकास के चरणों (" गरोलामेटो एट अल., 2006") और खोजकर्ता, संचारक, प्रथम–शब्द उपयोगकर्ता और संयोजक जैसी श्रेणियों का उपयोग करके किया गया था। क्योंकि शोधकर्ता एक हैनन लाइसेंस प्राप्त "भाषण–भाषा रोगविज्ञानी" (एसएलपी) है, वह इन युवाओं को उनके संचार प्रोफाइल के अनुसार वर्गीकृत करने में सक्षम थी।

तालिका 2 : संचार विकास के विभिन्न चरणों में बच्चों का वितरण (भाषा स्तर)

भाषा का स्तर	डायड की संख्या		
	एएसडी समूह (एन = 50)	टीडी-सीए समूह (एन = 50)	टीडी-एलएल समूह (एन = 50)
खोजकर्ता	8	0	8
संचारकों	21	0	21
प्रथम शब्द उपयोगकर्ता	18	0	18
समेलक	3	50	3

एएसडीः ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकारय टीडी–सीएः आमतौर पर विकासशील बच्चे कालानुक्रमिक उम्र से मेल खाते हैंय टीडी–एलएलः आमतौर पर विकासशील बच्चों का भाषा स्तर से मिलान किया जाता है

तालिका 2 संचार विकास के विभिन्न चरणों में बच्चों के वितरण पर डेटा प्रस्तुत करती है, जिन्हें तीन समूहों में वर्गीकृत किया गया हैः ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी) वाले बच्चे, आमतौर पर कालानुक्रमिक आयु (टीडी–सीए) के लिए मेल खाने वाले विकासशील बच्चे, और आम तौर पर भाषा के लिए मेल खाने वाले विकासशील बच्चे। स्तर (टीडी–एलएल), प्रत्येक समूह में 50 डायड होते हैं। "खोजकर्ता" चरण में, एएसडी और टीडी–एलएल दोनों समूहों में 8 बच्चे हैं, टीडी–सीए समूह में कोई बच्चा नहीं है। "संचारक" और "प्रथम शब्द उपयोगकर्ता" चरण एक समान पैटर्न दिखाते हैं, जिसमें एएसडी और टीडी–एलएल दोनों समूहों में क्रमशः 21 और 18 बच्चे हैं, और टीडी–सीए समूह में कोई भी नहीं है। आश्चर्यजनक रूप से, "कॉम्बिनर्स" चरण में, टीडी–सीए समूह के सभी 50 बच्चों का प्रतिनिधित्व किया जाता है, जबकि एएसडी और टीडी–एलएल समूहों में से केवल 3–3 बच्चों का प्रतिनिधित्व किया जाता है। यह डेटा इन समूहों के बीच संचार विकास के चरणों में महत्वपूर्ण अंतर का सुझाव देता है, जो एएसडी और टीडी–एलएल समूहों की तुलना में टीडी–सीए समूह में उन्नत भाषा कौशल को उजागर करता है, जो भाषा विकास के पहले चरणों में समान वितरण दिखाते हैं।

5. उपसंहार

प्रस्ताव और उत्तेजक इरादों के साथ अनिवार्यताओं का प्रतिशतय ''कब,'' ''कहां,'' स्वर–आधारित प्रश्न, जानकारीपूर्ण प्रश्नावली, घोषणात्मक जैसे प्रश्न जब पुराने टीडी समूह में माताओं की तुलना की जाती है, तो ''एएसडी और टीडी–एलएल समूहों'' दोनों में संचार व्यवहार कम हो गए थे। साथ ही, एएसडी और टीडी–एलएल समूहों की तुलना करने पर, दौड़ने और माँ द्वारा बच्चे को बैठने के लिए निर्देशित करने में बिताया गया समय अधिक था। इसके अलावा, बच्चों के अलग–अलग भाषा कौशल और कालानुक्रमिक उम्र के बीच, तालिका 42 में सूचीबद्ध कुछ संचार व्यवहार तीनों समूहों में सुसंगत थे। आश्चर्यजनक रूप से, तालिका में दिखाए गए अधिकांश संचार व्यवहार तीनों समूहों में भिन्न थे, जो सभी तीन समूहों में बच्चे और माताओं दोनों की विविधता का सुझाव देते हैं। एएसडी और टीडी समूहों में मां–बच्चे के संबंधों का संचार व्यवहार कुछ साझा और विशिष्ट विशेषताओं के साथ एक निरंतरता तक फैला हुआ है। परिणामस्वरूप, वर्तमान शोध में एएसडी और टीडी समूहों (कालानुक्रमिक उम्र और प्रवाह के लिए मिलान) के बीच मां–बच्चे के रिश्ते में पर्याप्त मात्रात्मक और गुणात्मक भिन्नताएं खोजी गईं।

संचार व्यवहार का अक्सर विशेषज्ञों द्वारा मूल्यांकन किया जाता है। बच्चों द्वारा निर्देशित संचार में देखभालकर्ताओं के इनपुट और उत्तरों को या तो नजरअंदाज कर दिया जाता है या उनकी बिल्कुल भी जांच नहीं की जाती है। जब भी अधिकांश नैदानिक सेटिंग्स में मां–बच्चे का रिश्ता देखा जाता है, तो अध्ययन का जोर देखभाल करने वालों के योगदान के बजाय पहले से ही बच्चे के संचार व्यवहार पर होता है। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि बाल–निर्देशित संचार प्रोफाइलिंग को मूल्यांकन के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में शामिल किया जाना चाहिए। इससे ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार वाले बच्चों में संचार क्षमताओं के उचित मूल्यांकन और पहचान में सहायता मिलेगी। इस अध्ययन में पहचाने गए और विश्लेषण किए गए संचार व्यवहारों का उपयोग मां–बच्चे की बातचीत का विश्लेषण करते समय नैदानिक और शोध कारणों के लिए चेकलिस्ट के रूप में किया जा सकता है ।

संदर्भ

1. एडमसन, एलबी, मैकआर्थर, डी., मार्कोव, वाई., डनबर, बी., और बेकमैन, आर. (2001)। ऑटिज्म और संयुक्त ध्यानः मातृ बोली के प्रति छोटे बच्चों की प्रतिक्रियाएँ। जर्नल ऑफ एप्लाइड डेवलपमेंटल साइकोलॉजी, 22(4), 439–453।
2. एल्ड्रेड, सी., ग्रीन, जे., और एडम्स, सी. (2004)। ऑटिज्म से पीड़ित बच्चों के लिए एक नया सामाजिक संचार हस्तक्षेपः प्रभावशीलता का सुझाव देने वाला पायलट यादृच्छिक नियंत्रित उपचार अध्ययन। जर्नल ऑफ चाइल्ड साइकोलॉजी एंड साइकियाट्री, 45(8), 1420–1430।
3. बह्निक , एलई (2010)। इंटरमॉडल धारणा और इंटरसेंसरी अतिरेक पर चयनात्मक ध्यानः विशिष्ट सामाजिक विकास और आत्मकेंद्रित के लिए निहितार्थ। जेजी ब्रेमनर और टीडी वाच्स (एड्स.) में, शिशु विकास की हैंडबुकः बेसिक रिसर्च (खंड 1, पृष्ठ 120–165)। माल्डेन, एमएः विली–ब्लैकवेल।
4. बह्निक, एलई, और लिक्लिटर, आर. (2002)। अंतरसंवेदी अतिरेक प्रारंभिक अवधारणात्मक और संज्ञानात्मक विकास का मार्गदर्शन करता है। बाल विकास और व्यवहार में प्रगति, 30, 153–189।

5. बह्टिक, एलई, और लिक्विलटर, आर. (2012)। प्रारंभिक अवधारणात्मक, संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास में अंतरसंवेदी अतिरेक की भूमिका। बहुसंवेदी विकास, 183–206।

6. बर्चिनल, एमआर, पेस्नर–फिनबर्ग, ई., पिएंटा, आर., और होवेस, सी. (2002)। प्रीस्कूल से दूसरी कक्षा तक शैक्षणिक कौशल का विकासः विकासात्मक प्रक्षेपवक्र के परिवार और कक्षा भविष्यवक्ता। जर्नल ऑफ स्कूल साइकोलॉजी, 40(5), 415–436।

7. कैपलान, बी., नीस, सीएल, और बेकर, बीएल (2015)। विकासात्मक स्तर और मनोविकृतिः विकासात्मक देरी वाले बच्चों की तुलना कालानुक्रमिक और मानसिक आयु से मेल खाने वाले नियंत्रणों से करना। विकासात्मक विकलांगताओं में अनुसंधान, 37, 143–151।

8. कारपेंटर, एम., और टोमासेलो, एम. (2000)। संयुक्त ध्यान, सांस्कृतिक शिक्षा और भाषा अधिग्रहण। एएम वेदरबी और बीएम प्रिजेंट (एड्स.) में, ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार (पीपी. 31–54)। बाल्टीमोरः ब्रूक्स

9. फ्रीडमैन, एम., वुड्स, जे., और सैलिसबरी, सी. (2012)। प्रारंभिक हस्तक्षेप प्रदाताओं के लिए देखभालकर्ता कोचिंग रणनीतियाँः परिचालन परिभाषाओं की ओर बढ़ना। शिशु एवं छोटे बच्चे, 25(1), 62–82।

10. फ्रीडमैन, एम., वुड्स, जे., और सैलिसबरी, सी. (2012)। प्रारंभिक हस्तक्षेप प्रदाताओं के लिए देखभालकर्ता कोचिंग रणनीतियाँः परिचालन परिभाषाओं की ओर बढ़ना। शिशु और छोटे बच्चे, 25(1), 62–82.

11. फुलकर्सन, एएल, और वैक्समैन, एसआर (2007)। शब्द (लेकिन स्वर नहीं) वस्तु वर्गीकरण की सुविधा प्रदान करते हैंः 6 और 12 महीने के बच्चों से साक्ष्य। अनुभूति, 105(1), 218–228.

12. गैडो, केडी, डेविंसेंट , सीजे, पोमेरॉय, जे., और अजीजियन, ए. (2005)। पीडीडी बनाम क्लिनिक और सामुदायिक नमूनों के साथ प्राथमिक विद्यालय आयु के बच्चों में डीएसएम–प्ट लक्षणों की तुलना। ऑटिज्म, 9(4), 392–415।

13. गार्डनर, एफ., वार्ड, एस., बर्टन, जे., और विल्सन, सी. (2003)। बच्चों की आचरण समस्याओं के प्रारंभिक विकास में माँ–बच्चे के संयुक्त खेल की भूमिकाः एक अनुदैर्ध्य अवलोकन अध्ययन। सामाजिक विकास, 12(3), 361–378.

14. हिर्श–पसेक, के., और बर्चिनल, एम. (2006)। समय के साथ माँ और देखभालकर्ता की संवेदनशीलताः परिवर्तनशील और व्यक्ति–केंद्रित दृष्टिकोण के साथ भाषा और शैक्षणिक परिणामों की भविष्यवाणी करना। मेरिल–पामर त्रैमासिक, 52, 449–485।

15. हॉलिच , जी., हिर्श–पसेक, के., और गोलिनकॉफ , आरएम (2000)। एक शब्द सीखने में क्या लगता है? बाल विकास में अनुसंधान के लिए सोसायटी के मोनोग्राफ, 65(3), 1–16।

16. कसारी, सी., सिगमैन, एम., मुंडी, पी., और यिर्मिया, एन. (1988)। ऑटिस्टिक बच्चों के साथ देखभालकर्ता की बातचीत। जर्नल ऑफ एब्नॉर्मल चाइल्ड साइकोलॉजी, 16(1), 45–56।

17. कसारी, सी., सिगमैन, एम., मुंडी, पी., और यिर्मिया, एन. (1990)। सामान्य, ऑटिस्टिक और मानसिक रूप से मंद बच्चों की संयुक्त ध्यान संबंधी बातचीत के संदर्भ में प्रभावशाली साझाकरण। जर्नल ऑफ ऑटिज्म एंड डेवलपमेंटल डिसऑर्डर, 20(1), 87–100।

18. लेमनेक , केएल, स्टोन, डब्लूएल, और फिशेल, पीटी (1993)। विकलांग प्रीस्कूलरों में माता–पिता–बच्चे की बातचीतः माता–पिता के व्यवहार और अनुपालन के बीच संबंध। जर्नल ऑफ क्लिनिकल चाइल्ड साइकोलॉजी, 22(1), 68–77.

19. लेवकोविज, डीजे (2000)। इंटरसेंसरी टेम्पोरल परसेप्शन का विकासः एक एपिजेनेटिक सिस्टमध्सीमाएं दृश्य। मनोवैज्ञानिक बुलेटिन, 126(2), 281–308।

20. लेवी, एएल, और डॉसन, जी. (1992)। युवा ऑटिस्टिक बच्चों में सामाजिक उत्तेजना और संयुक्त ध्यान। जर्नल ऑफ एब्नॉर्मल चाइल्ड साइकोलॉजी, 20(6), 555–566।

21. लोज्कासेक , एम., गोल्डबर्ग, एस., मार्कोविच , एस., और मैकग्रेगर, डी. (1990)। विकासात्मक रूप से विलंबित पूर्वस्कूली बच्चों में मातृ प्रतिक्रिया पर प्रभाव। जर्नल ऑफ अर्ली इंटरवेंशन, 14(3), 260–273।

22. रीस, जे. (1988). मातृ आयु और समानता के अनुसार बच्चे के पालन–पोषण की अपेक्षाएँ और विकासात्मक ज्ञान। शिशु मानसिक स्वास्थ्य जर्नल, 9(4), 287–304।

23. रोजर्स, एसजे, और पेनिंगटन, बीएफ (1991)। शिशु ऑटिज्म में कमी के लिए एक सैद्धांतिक दृष्टिकोण। विकास और मनोविकृति विज्ञान, 3(2), 137–162.

24. ट्रॉनिक , ई. (2007). शिशुओं और बच्चों का तंत्रिका–व्यवहारात्मक और सामाजिक–भावनात्मक विकास। न्यूयॉर्क: डब्ल्यूडब्ल्यू नॉर्टन एंड कंपनी।

25. टर्नबुल, एपी, और टर्नबुल, एचआर (2001)। परिवार, पेशेवर और असाधारणता: सशक्तिकरण के लिए सहयोग करना। कोलंबस, ओएच: प्रेंटिस हॉल।

26. उजगिरिस , आईसी (1999)। गतिविधि के रूप में नकल: इसके विकासात्मक पहलू। जे. नडेल और जी. बटरवर्थ (सं.) में, शैशवावस्था में अनुकरण (पीपी. 186–206)। कैम्ब्रिज, इंग्लैंड: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

27. योडर, पी., और स्टोन, डब्ल्यूएल (2006)। ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकारों वाले प्रीस्कूलरों के लिए दो संचार हस्तक्षेपों की यादृच्छिक तुलना। जर्नल ऑफ कंसल्टिंग एंड क्लिनिकल साइकोलॉजी, 74(3), 426।

28. योशिदा, एच. (2012)। बच्चों के क्रिया सीखने में ध्वनि प्रतीकवाद का एक अंतर–भाषाई अध्ययन। जर्नल ऑफ कॉग्निशन एंड डेवलपमेंट, 13(2), 232–265।

29. जुको –गोल्ड्रिंग, पी. (2002)। भाई–बहन की देखभाल. पालन–पोषण की पुस्तिका, 3, 253–286।

30. जुको –गोल्ड्रिंग, पी., और आर्बिब, एमए (2007)। सामर्थ्य, प्रभावशीलता, और सहायता प्राप्त अनुकरण: देखभालकर्ता और ध्यान का निर्देशन। न्यूरोकंप्यूटिंग, 70(13–15), 2181–2193।

निर्विद्यालयीयकरण एवं शिक्षा के भविष्य शास्त्र का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. पुष्पा कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
बी.एड. संकाय
गौतम बुद्ध शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड
Email :
Mob.: 7903005045, 9470159531

सारांश–

प्राचीन काल में शिक्षा में लिए गुरूकुल होते थे मध्यकाल में मकतब और मदरसा का प्रमुख स्थान रहा है। वर्तमान युग में शिक्षा का केन्द्र विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, मुक्तविद्यालय, मुक्त विश्वविद्यालय है। इक्कीसवीं सदी में वर्चुअल विद्यालय एवं विश्वविद्यालय की बात की जा रही है। इसी बीच दुनियां के कुछ विकसित देशों में एक अद्भुत अभियान चलाया जा रहा है– विद्यालय विहीन शिक्षा प्रदान करने का इस विचारधारा के पालक, पोषक, समर्थक विद्वानों का मानना है कि शिक्षा उपयोग थी। जिससे बालक के व्यवहार, संस्कार, समझ में परिवर्तन करके उसे समाज का सुमभ्य नागरिक बनाया जाता था किन्तु वर्तमान भौतिकवादी एवं जटिल तकनीकी विकास के युग में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा को निवेश मात्र वही वरन् विशेष प्रकार का निवेश मानता है। इस कारण से देश दुनिया के धनाड्य वर्ग संस्थानीकरण की प्रक्रिया को अपनाया है। शिक्षा व्यवस्था पर भौतिक लोभ लालच का प्रपंच दिखाकर जन–जन के मन में निवेश के लिए प्रेरित किया है। इस बात पर चिन्तन मनन और अनुशीलन करने वाले विद्वानों ने शिक्षा के निजीकरण का विरोध करना प्रारम्भ किया है ऐसी विचारधारा के समर्थकों का विरोध करना प्ररम्भ किया है ऐसी विचारधारा के समर्थकों का मानना है कि विद्यालय डिब्बा बंद सूचनाएं बेचते हैं बालक के भविष्य के साथ खिलवाड़ करते हैं। अतः दुनिया भर में लोगों को आगे भुलकर इस जटिल शाक्षक समस्या का समाधान तलाशना चाहिए।

कीवर्ड्स– पूँजीपति, छद्म पाठ्यक्रम, भविष्यशास्त्र, संस्थानीकरण इत्यादि।

प्रस्तावना–

इक्कीसवीं सदी में बहुत तेजी से तकनीकी बदलाव हो रहा है। बालक दुद्धी–पटरी, कलम–दवात, कापी–पेन्सिल किताबें आदि को छोड़कर बहुत तेज गति से ई. स्लेट, ई. मीडिया, ई. पोर्टल, ई–वक्र की ओर बढ़ रहा है। समाज में शिक्षा का स्वरूप तेज गति से बदलता हुआ दिखाई दे रहा है। इस स्थिति में विद्यालय की भूमिका शिक्षक का महत्व छात्रों की गतिविधियां, पुस्तकालय की उपयोगिता, अन्तः स्पर्श भावनाएं इत्यादि का क्या होगा। आमतौर पर शिक्षा की शुरूआत विद्यालय आने–जाने से मानी जाती है। किन्तु शिक्षा तो जीवन के साथ प्रारम्भ होती है

और जीवन के साथ अन्त होता है। इस परिपेक्ष्य में निर्विद्यालयीकरण की अवधारणा का शिक्षा के भविष्य को किस–किस ढ़ंग से प्रभावित कर सकते हैं।

निर्विद्यालयीयकरण की अवधारणा–

वर्तमान जटिल विश्व में समानता की बात करना कटु असत्य है। इसी आधार पर विश्व विकसित अविकसित और विकासशील देशों में विभाजन किया गया है। वर्तमान समय में अविकसित एवं विकासशील देशों में विद्यालयीकरण की अवधारणा प्रबल है तो विकसित देशों में निर्विद्यालयीकरण का आंदोलन चलाया जा रहा है। निर्विद्यालयीकरण का आंदोलन 20वीं सदी के सातवें दशक में मानवतावादी दार्शनिक इवान इलियच ने प्रारम्भ किया। इन्होंने अपनी पुस्तक 'द डिस्कूलिंग सोसाइटी' के माध्यम से निर्विद्यालयीकरण का विचार विकसित देशों के समाज में रखा निर्विद्यालयीकरण विद्यालयों के संस्थानीकरण का विरोध करता है और मानवीय समाज को तकनीकियों के उत्पीड़न से बचाने का कदम उठाना चाहता है।

निर्विद्यालयीकरण की अवधारणा इस बात पर बल देती है कि विद्यालय औद्योगिक समाज में पूँजीपतियों के स्वार्थ पूर्ति का साधन मात्र है। जिसके परिणाम स्वरूप बुद्धिमान मानव निरीह प्राणी बनकर रह गया है वह उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का उपभोग करता है किन्तु तकनीकियों का शिकार भी हो जाता है। अतः सम्पूर्ण मानव जाति की उन्नति के लिए संस्थाओं का संस्थानीकरण खत्म करना बहुत जरूरी हो गया है।

इवान इलियच के अनुसार ''विद्यालय वह संस्था है जो किसी अवस्था विशेष से संबंद्ध पूर्णकालिक उपस्थिति तथा अनिवार्य पाठ्यक्रम पर आग्रह रखती है।

निर्विद्यालयीकरण से संबंधित प्रमुख तथ्य :–

- निर्विद्यालयीकरण चिंतन की एक नई दिशा एवं क्रांतिकारी विचारधारा है।
- निर्विद्यालयीकरण में विकसित देशों की विसंगतियों को उजागर किया है।
- निर्विद्यालयीकरण संस्थागत शिक्षा को मानवीय शोषण का माध्यम बताया गया है।
- निर्विद्यालयीकरण संस्थानीकरण के विरोध में कार्य करती है।
- निर्विद्यालयीकरण समाज में असमानता एवं स्तरीकरण कम करने के लिए प्रयत्नशील है।
- निर्विद्यालयीकरण विद्यालय डिब्बाबंद सूचनाएं बेचते हैं को प्रस्तुत करता है।
- निर्विद्यालयीकरण विद्यालयों को अनुपयोगी बताता है।
- निर्विद्यालयीकरण संस्थागत पाठ्यक्रम को छद्म पाठ्यक्रम बताया है।
- निर्विद्यालयीकरण जटिल समाज व्यवस्था पर आधारित धारणा है। यह काल्पनिक एवं वैचारिक भी हो सकती है।

- निर्विद्यालयीकरण की विचारधारा सिर्फ विकसित देशों पर लागू होता है।
- इक्कीसवीं सदी में इस अवधारणा का प्रभाव विकासशील दशा में भी दिखायी दे रहा है।

शिक्षा के भविष्य शास्त्र की अवधारणा–

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। मानव स्वभाव है कि वह पूर्व में घटित घटनाओं से सीखता रहता है। वर्तमान में सुधार कर आगे बढ़ने की कोशिश करता है और भविष्य के प्रति चिंतित रहता है। वह भविष्य के लिए सचेतन रूप में अनेकों ने योजनाएं बनाता रहता है। ऐसी योजनाएं मानव के वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक जीवन से संबंधित होती है। सरल समाज की तुलना में जटिल समाज में भविष्य के प्रति चिंता दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। इनका अध्ययन करना भविष्यशास्त्र का मुख्य विषय है।

भविष्यशास्त्र शैक्षिक दृष्टिकोण से एक नवीन विषय है जो अपने निर्माणावस्था में है भविष्यशास्त्र विषय पर चिंतन का प्रारंभ 20वीं सदी के अन्तिम समय में और 21वीं सदी के प्रारंभिक समय में अमेरिका, इंगलैण्ड आदि देशों में हुआ। भविष्यशास्त्र का अध्ययन अन्तर विषयी होता है जिसका संबंध सभी सामाजिक विषयों से होता है।

भविष्यशास्त्र का उद्देश्य जनसामान्य को भावी संभावनाओं से परिचित कराना तथा उनमें व्यवहारिक परिवर्तन करना है। साथ ही साथ मानवीय जीवनयापन की शैली में परिवर्तन कर चेतनात्मक क्षमता का विकास करना है।

भविष्यशास्त्र को समझने और अकिंत करने की दो प्रमुख विधियाँ इस प्रकार है– एक सीनारियों लेखन विधि से भविष्य का काल्पनिक इतिहास बनाया जाता है कि किसी समाज में होने वाली भावी घटनाओं की कल्पना, क्रमबद्धता, संबंध और परस्पर प्रभाव का पता लगाया जाता है। दूसरा डेल्फी विधि में विशेषज्ञों की सम्मतियों का गुप्त रूप में विवरणात्मक अध्ययन कर परिवर्तन संशोधन और भविष्य के लिए सतर्क किया जाता है।

भविष्यशास्त्र की शिक्षा के प्रमुख प्रश्न–

- भविष्य में शिक्षा कैसी होगी?
- भविष्य में शिक्षा का अर्थ क्या होगा?
- भविष्य में शिक्षा किसके लिए होगी?
- भविष्य में शिक्षा का क्या प्रभाव होगा?
- भविष्य में शिक्षा समाज को कैसे प्रभावित करेगी?
- भविष्य में शिक्षक कौन होंगे?
- भविष्य में सीखने वाले कौन होगें?

● भविष्य में सामाजिक संरचना कैसी होगी?

● भविष्य में आर्थिक दशा में क्या बदलाव होगा?

● भविष्य में शिक्षक–छात्र संबंध, पाठ्यक्रम, विधि, स्कूल आदि में क्या बदलाव होगा?

शिक्षा का भविष्यशास्त्र के संबंध में यूनेस्कों का प्रतिवेदन 'द लर्निंग टु बी' का सारांश इस प्रकार है–

● भविष्य की शिक्षा का उद्देश्य जीवनपर्यन्त चलने वाली शिक्षा हो मानव का सम्पूर्ण विकास करने वाली शिक्षा हो विश्व में लोकतांत्रिक भावना उत्पन्न करने वाली शिक्षा हो विश्व समुदाय का निर्माण करने वाली शिक्षा हो।

● भविष्य शिक्षा की विषय सामग्री विषय सामग्री सामूहिक न होकर व्यक्ति विशेष के लिए हो सीखने की प्रक्रिया में अधिगमकर्त्ता को विशेष महत्व हो अधिगम की प्रक्रिया पूर्णतया गतिशील व्यवस्था पर अधारित हो छात्रों की आयु सीमा, विषय, पाठ्यक्रम, परीक्षा आदि का अवरोध समाप्त हो।

● भविष्य की शिक्षण प्रक्रिया क्रियात्मक शिक्षा पर आधारित हो आधुनिक तकनीकियों का प्रयोग हो चयन के बजाय मार्गदर्शन हो शिक्षा की प्रक्रिया हो।

निष्कर्ष–

शिक्षा व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार एवं भौतिक अधिकार दोनों है। शिक्षा के बिना समाज, राज्य, राष्ट्र एवं विश्व की कल्पना नहीं की जा सकती है। निर्विद्यालयीकरण का प्रत्यय शिक्षा के भविष्य को प्रभावित कर सकता है। विद्यालय को समाज का लघु रूप कहा गया है, विद्यालय की स्थापना समाज द्वारा निर्धारित शैक्षिक, सामाजिक, भौतिक, अध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। शिक्षा के औपचारिक अभिकरण के रूप में विद्यालय का सर्व प्रथम स्थान है। जिस प्रकार व्यक्ति को स्वस्थ रहने के लिए नियमित संयमित एवं व्यवस्थित जीवन–यापन करना पड़ता है। उसी प्रकार उसे विद्यालयों में ज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं क्रियात्मक क्षमताओं का विकसित करके योग्यताधारी कौशलपूर्ण, सामंजस्यपूर्ण भावी जीवन प्रदान करता है। समाज में निर्विद्यालयीकरण की संकल्पना को स्वीकार करना असहज प्रतीत हो रहा है किन्तु यह अवलोकन का विषय है कि इक्कीसवीं सदी के अंत तक इसका स्वरूप क्या होगा।

संदर्भ ग्रन्थ–

डॉ. राम शकल पाण्डेय, शिक्षा सिद्धान्त– विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा (उ.प्र.)

डॉ. आर.ए. शर्मा, शिक्षा के दार्शनिक आधार एवं समाजशास्त्रीय, आरलाल बुक डिपो, मेरठ (उ.प्र.)

यूनरेस्कोरिपोर्ट– द लर्निंग टू बी.....

डॉ. राम शकल पाण्डेय– विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री– विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा (उ.प्र.)

डॉ. अरविन्द कुमार यादव– शिक्षाशास्त्र समग्र अध्ययन– इडुनिक पब्लिकेशन, जौनपुर (उ.प्र.)

डॉ. आर. सचदेव– समाजशास्त्र का सिद्धान्त, किताब महल एजेंसी, पटना (बिहार)

डॉ. ए.पी. गुप्ता– भारती शिक्षा समस्याएं– शारदा पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद (उ.प्र.)

शिक्षक शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग

डॉ. शशिकांत यादव

प्राचार्य

एस.बी.एम. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बभनबै, हजारीबाग–825302 (झारखंड)

Email : sasikant86@gmail.com

Mob.: 8817724300, 96086208049

सारांश

वर्तमान युग सूचना क्रान्ति का युग है। हम ज्ञान आधारित समाज में रह रहे हैं और ज्ञान किसी राष्ट्र की शक्ति है एवं व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इस बढ़ते हुए ज्ञान तक तुरन्त पहुँचने और उसका उपयोग करने के लिए नवीन तकनीकों की आवश्यकता है। आधुनिक युग सूचना संप्रेषण कनीकी का युग है द्य यह मानव के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है द्य इसके अंतर्गत ऐसे तकनीकी की बात करते हैं जो सूचना और संप्रेषण से संबंधित है और जानकारी को साझा किया जाता है। इसके अंतर्गत टीवी, कंप्यूटर, इंटरनेट, वायरलेस नेटवर्क, सेलफोन, ब्रॉडकास्टिंग तकनीकी (रेडियो और टेलीविजन) और दूसरे संप्रेषण माध्यम आते हैं द्य यह कंप्यूटर आधारित डाटा और विचारों का प्रबंधन करता है द्य यह उन तकनीकों को संदर्भित करता है जो टेली संचार के माध्यम से सूचना प्रदान करती है द्य सूचना तकनीकी ज्ञान, कौशल तथा अभिवृत्ति प्रदान करने की एक नवीन तथा उभरती हुई विशिष्ट शैक्षिक प्रक्रिया है द्य जिसमें समय और स्थान का शिक्षण एवं अधिगम में कोई फर्क नहीं होता है द्य इस तकनीकी के माध्यम से दूरस्थ छात्रों को भी उत्तम शिक्षा प्रदान की जा सकती है द्य इसके लिए सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी सर्वाधिक उपयुक्त साधन है। शिक्षक शिक्षा में आईसीटी का उपयोग बेहद फायदेमंद साबित हुआ है क्योंकि यह कंप्यूटर और इंटरनेट के उपयोग के माध्यम से शिक्षकों के बीच सहयोग और संचार की सुविधा प्रदान करता है । इससे उन्हें विचारों का आदान–प्रदान करने और एक–दूसरे से ज्ञान प्राप्त करने में मदद मिलती है, जिससे सामूहिक सीखने की भावना को बढ़ावा मिलता है ।

कीवर्ड– सूचना क्रान्ति , सर्वांगीण विकास, सूचना संप्रेषण तकनीकी, ब्रॉडकास्टिंग तकनीकी

प्रस्तावना–

शिक्षण हमारे समाज में सबसे चुनौतीपूर्ण व्यवसायों में से एक बनता जा रहा है जहां ज्ञान का तेजी से विस्तार हो रहा है और आधुनिक प्रौद्योगिकियां शिक्षकों से यह सीखने की मांग कर रही हैं कि अपने शिक्षण में इन प्रौद्योगिकियों का उपयोग कैसे किया जाए । जबकि नई प्रौद्योगिकियाँ शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं को बढ़ाती हैं वे समाधान का एक हिस्सा भी प्रदान करती हैं । सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए अधिक लचीले और प्रभावी तरीके प्रदान कर सकती है । सेवापूर्व और सेवाकालीन शिक्षक

प्रशिक्षण में सुधार कर सकती है और शिक्षकों को वैश्विक शिक्षक समुदाय से जोड़ सकती है। यह पेपर शिक्षक प्रशिक्षण में आईसीटी के उपयोग में पाए जाने वाले विभिन्न दृष्टिकोणों का विश्लेषण और व्यवस्थित करके उन्हें चार–सेल मैट्रिक्स में व्यवस्थित करता है । उन दृष्टिकोणों के विश्लेषण के आधार पर, यह उन नई संभावनाओं और चुनौतियों पर चर्चा करता है जो आईसीटी ने शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास में लायी हैं। यह शिक्षक प्रशिक्षण और नेटवर्किंग में आईसीटी एकीकरण के संबंध में उभरते शोध मुद्दों की चर्चा के साथ समाप्त होता है।

शिक्षक शिक्षा में की सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी आवश्यकता

आज के शैक्षिक परिदृश्य में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) को शिक्षक शिक्षा के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में पहचाना जा रहा है शिक्षक शिक्षा में आईसीटी की आवश्यकता शिक्षा की बदलती गतिशीलता से उत्पन्न होती है, जहां अकेले पारंपरिक शिक्षण विधियां आज के तकनीक–प्रेमी छात्रों को शामिल करने और शिक्षित करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। जैसे–जैसे प्रौद्योगिकी तेजी से आगे बढ़ रही है, छात्रों को कक्षा के बाहर लगातार डिजिटल उपकरणों और प्लेटफार्मों की एक विस्तृत श्रृंखला से अवगत कराया जाता है । इसलिए शिक्षकों के लिए यह सुनिश्चित करने के लिए आईसीटी को अपनाना जरूरी है कि उनकी शिक्षण पद्धतियां उनके छात्रों की सीखने की प्राथमिकताओं और अनुभवों के अनुरूप हों। इसके अलावा, शिक्षक शिक्षा में आईसीटी व्यावसायिक विकास और आजीवन सीखने को बढ़ावा देता है । ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और समुदायों के माध्यम से, शिक्षक वेबिनार, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और शैक्षिक फोरम जैसे व्यावसायिक विकास संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुँच सकते हैं । सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के विभिन्न साधन उपयोगी सिद्ध हुए हैं। ज्ञान संरक्षण, सम्वर्धन एवं प्रसरण के लिए सूचना एवं संचार तकनीकी आज के युग में आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है । सूचना एवं संचार तकनीकी के विभिन्न साधनों के प्रभावशाली उपयोग ने जीवन के सभी पक्षो को प्रभावित किया है। शिक्षार्थियो में रूचि बढ़ाना, अभिप्रेरित करना, अधिगम और प्रशिक्षण देना, अनुकूल शैक्षिक वातावरण, विभिन्न शक्तियों का विकास आदि के लिए सूचना एवं संचार तकनीकी महत्वपूर्ण एवं उपयुक्त है।

21वीं सदी की शिक्षक शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका

यह शिक्षण की पारंपरिक पद्धति को हटाता है और शिक्षक को आधुनिक शिक्षण पद्धति लागू करने के लिए तैयार करता है। आईसीटी शिक्षक को बहुत कम समय में छात्रों तक जानकारी पहुंचाने में मदद करता है। आईसीटी शिक्षक को छात्रों को प्रेरित करने और सीखने में रुचि बढ़ाने में मदद करता है। आईसीटी से जुड़ी शिक्षक शिक्षा में डिजिटल संसाधनों और प्लेटफार्मों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है जो शिक्षकों को अधिक कुशल और प्रभावी तरीके से जानकारी तक पहुंचने, बनाने, व्यवस्थित करने और साझा करने में सक्षम बनाती है। ये उपकरण न केवल ज्ञान और कौशल के अधिग्रहण की सुविधा प्रदान करते हैं, बल्कि शिक्षकों के बीच सहयोग, आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता को भी बढ़ावा देते हैं। शिक्षक शिक्षा में

आईसीटी को शामिल करने का एक महत्वपूर्ण लाभ विशाल मात्रा में नवीनतम जानकारी और संसाधनों तक पहुंचने की क्षमता है। इंटरनेट शिक्षकों को ढेर सारी शैक्षिक सामग्री, शोध पत्र, पाठ योजनाएँ और शिक्षण रणनीतियाँ प्रदान करता है जिनका उपयोग उनकी शैक्षिक प्रथाओं को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी शिक्षाशास्त्र के लिए दृष्टिकोण –

आजकल हम टेक्नोलॉजी का खूब इस्तेमाल करते हैं. शिक्षकों को हमें प्रौद्योगिकी का अच्छे से उपयोग करना सिखाना होगा ताकि हम डिजिटल दुनिया के लिए तैयार हो सकें। ऐसे विभिन्न तरीके हैं जिनसे शिक्षक हमें प्रौद्योगिकी सिखा सकते हैं, और प्रत्येक तरीके के अपने अच्छे और बुरे हिस्से होते हैं। एक तरीके को प्रोजेक्ट–आधारित शिक्षा कहा जाता है, जहां हम प्रौद्योगिकी का उपयोग करके वास्तविक समस्याओं पर काम करते हैं। इससे हमें एक साथ काम करने और रचनात्मक बनने का तरीका सीखने में मदद मिलती है। दूसरा तरीका यह है कि शिक्षक हमें बताते हैं कि हमें क्या जानना चाहिए। यह रास्ता व्यवस्थित और स्पष्ट है, लेकिन यह हमें उतना रचनात्मक नहीं होने देता या अपने बारे में सोचने नहीं देता। आखिरी रास्ता तब होता है जब हमें यह चुनना होता है कि हम क्या सीखना चाहते हैं। हम स्वयं चीजों का अन्वेषण और पता लगा सकते हैं। यह तरीका हमें अधिक स्वतंत्र और सोचने में अच्छा बनाता है। लेकिन इसे इस तरह से करने में अधिक समय और संसाधन लग सकते हैं।

निष्कर्ष–

यहाँ इस बात का वर्णन करना भी आवश्यक है कि एक शिक्षक को छात्र और समाज की अपेक्षाओं के अनुसार निश्चित समय में अधिक ज्ञान वितरित करना होता है, चाहे पाठ्यचर्या पहले जितना ही रहता है । विभिन्न क्षेत्रों के विकास में सूचना एवं संचार तकनीकी का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा व्यवस्था में बदलाव लाने में सूचना एवं संचार तकनीकी की महत्पूर्ण भूमिका रही है । सूचना संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) शिक्षकों के लिए सीखना महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ है जानकारी खोजने और साझा करने के लिए कंप्यूटर, टैबलेट और इंटरनेट का उपयोग करना। जब शिक्षक आईसीटी का उपयोग करते हैं, तो इससे उन्हें बेहतर ढंग से पढ़ाने में मदद मिलती है और उन्हें अन्य शिक्षकों के साथ बात करने और काम करने का मौका मिलता है। वे एक–दूसरे से जुड़ने, विचार साझा करने और नई चीजें सीखने के लिए ऑनलाइन टूल का उपयोग कर सकते हैं । इससे उन्हें बेहतर शिक्षक बनने में मदद मिलती है और एक अच्छा समुदाय बनता है। आईसीटी शिक्षकों को बहुत सी चीजों तक पहुंच प्रदान करता है जो उन्हें पढ़ाने में मदद कर सकती हैं, जैसे ऑनलाइन लाइब्रेरी और शैक्षिक वेबसाइटें । वे अपने पाठों को अधिक मनोरंजक और रोचक बनाने के लिए इन चीजों का उपयोग कर सकते हैं। आईसीटी शिक्षकों को यह जांचने की भी सुविधा देता है कि उनके छात्र कितनी अच्छी तरह सीख रहे हैं। वे ऑनलाइन क्विज दे सकते हैं और देख सकते हैं कि उनके छात्र कैसा प्रदर्शन कर रहे हैं। शिक्षकों के लिए आईसीटी का उपयोग करना महत्वपूर्ण है ताकि वे अच्छी तरह से पढ़ा सकें और छात्रों को भविष्य के लिए तैयार कर सकें ।

संदर्भ सूची–

1. कुलश्रेष्ठ, एस.पी. शैक्षिक तकनीकी, निर्देशन एवं प्रबन्धन, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा।
2. चौधरी, पंकज (2008) भारत के सुचना तकनीकी का विकास, नई दिल्ली, संचार साहित्य प्रकाशन।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
4. शर्मा, आर.ए. (1989). शिक्षक शिक्षा सिद्धांत, अभ्यास और अनुसंधान। मेरठः लॉयल बुक डिपो।
5. सिंह। वाई.के. (2005)। शिक्षक शिक्षा नई दिल्लीः कुलभूषण नांगिया एपीएच प्रकाशन।
6. अमरेश्वरन और सिंह एसपी (2011)। ''ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग के माध्यम से शिक्षक शिक्षा – सूचना और संचार प्रौद्योगिकी। आधारित शिक्षाशास्त्र एकीकरण। टेक्नोलर्नः शैक्षिक प्रौद्योगिकी का एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल 1.1

वर्तमान समाज में शिक्षा के औचित्य का एक अवलोकन

डॉ. श्रद्धा मिश्रा
प्राचार्या
सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय, अम्बीकापुर, सरगूजा, छत्तीसगढ़
Email :
Mob.: 9009711222

सारांश–

शिक्षा के तीन प्रमुख साधन औपचारिक, अनौपचारिक एवं औपचारिकेत्तर है। इसमें से विद्यालय शिक्षा का औपचारिक साधन है तथा समाज व्यापक रूप में अनौचारिक साधन है। विद्यालय और समाज में मध्य बहुत घनिष्ठ सम्बंध होता है। समाज ही विद्यालय की स्थापना करता है। विद्यालय के नियम कानून निर्धारित करने में सरकारें सहयोग करती है। प्रयोजनवादी विचारधारा में विद्यालय के व्यापक स्वरूप का उल्लेख किया गया कि विद्यालय का लघु रूप होता है। समाज के नियमों एवं कानूनों के लिए समाजीकरण होना आवश्यक है, तो देश दुनियां की व्यवस्था, संचालन एवं गतिविधियों को समझने के लिए विद्यालय जरूरी है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में विद्यालय एवं समाज के मध्य अन्तःक्रिया का मानव विकास के लिए अहम् योगदान है।

महत्वपूर्ण शब्दावली– अभिकरण, समाजीकरण, अन्तःमन।

प्रस्तावना–

शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है। शिक्षा के अभाव शिशु का शिष्ट बालक युवा, प्रौढ़ आदि बन पाना असम्भ्य है। शिक्षा की नींव माँ की कोख से प्रारम्भ होती है और जीवन पर्यन्त चलती रहती है। माँ के बाद परिवार एवं पड़ोस के सदस्यों की शिक्षा–दीक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किन्तु बालक का विद्यालय में प्रवेश होना उसके लिए नये संसार में जाने के समान होता है। प्राचीन काल में गुरूकूल में प्रवेश के लिये उपनयन संस्कार का प्रबंध किया गया वर्तमान व्यवस्था के तहत माता–पिता के साथ शिशु की प्रारम्भिक अनुभूतियों को अवलोकित किया जाता है। विद्यालय में प्रवेश के साथ ही बालक प्राथमिक समूह के अतिरक्त द्वितीयक समूह से परिचय प्राप्त करता है। घर, परिवार, पड़ोस और खेल के साथी के अलावा विद्यालय के सहभागियों, प्रमूख और समाज का दर्शन होता है उसे अब धीरे–धीरे यह समझ आने लगता है कि दुनियां माता–पिता, परिवार तक सीमित न होकर बहुत दूर–दूर तक फैली हुई है। विद्यालय बालक के समाजीकरण का एक प्रमुख साधन है। विद्यालय ही बालक को नियमित, संयमित, व्यवस्थित करके मार्गन्तरीकरण करने का कार्य करता है। विद्यालय शिक्षा का औपचारिक एवं सक्रिय अभिकरण है। विद्यालय में शिक्षक, पाठ्यक्रम और परिवेश बालक के मन पर अमिट छाप छोड़ता है। जिसे वह आजीवन अपने अन्तस्थमन में बैठा लेता है। विद्यालय में बालक में बालक की भूमिका बढ़ जाती है। अब वह छात्र, मित्र, विषय, कलम, पेंसिल, कापी, बोर्ड, कुर्सी मेज आदि के स्थान पद एवं कार्य को जाता है। जान डीवी के अनुसार ''विद्यालय समाज का लघु रूप है।''विषय शिक्षा का स्थल मात्र नहीं होता है। वरन् विद्यालय में सम्पन्न होने

वाली विविध गतिविधियां बालक को समाज के प्राथमिक परिचय करवाता है। बालक का जन्म माँ की गोद में होता है किन्तु वास्तव में परिवार, पड़ोस और विद्यालय उस जैविक प्राणी को सामाजिक प्राणी बनाने में अहम भूमिका अदा करते है। इस बात का अवलोकन विद्यालयविहीन शिशु/बालक का आकलन करके अनुभव किया जा सकता है। विद्यालय के शिक्षकों में ईश्वर का दर्शन करता है। विद्यालय की चाहारदीवारी में उसकी आशाएं छिपी होती है। विद्यालय के मित्रों के मध्य वह अपना अस्तित्व खोजता है। विद्यालय में प्रयुक्त भौतिक संसाधन बालक के स्मृति पटल को निर्मित करते हैं। विद्यालय में होने वाली पाठ्य सहगामी क्रियाएं उसके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक आचरण व्यवहार में परिवर्तन लाती है।

शिक्षा के औचित्य का अवलोकन–

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है। इसका समाज से अलग कोई अस्तित्व नहीं है। परिवार, पड़ोस, खेल के साथी, स्कूल, कॉलेज, समूह, समुदाय आदि समाजीकरण के प्रमुख अभिकरण हैं। समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया होती है, जिसमें बालक समाज के नियम, कानून, विचार, व्यवहार, आदर्शों को सीखता है। सीखना व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन को कहते हैं। शिक्षा का प्रयाय सीखना से व्यापक होता है, किन्तु शिक्षा और सीखना में परस्पर घनिष्ठ संबंध है। सीखने और सीखाने की प्रक्रिया में समाज की महत्वपूर्ण होती है। जैसा समाज, जैसे संगी साथी, जैसा रहन–सहन वैसी शिक्षा मिलना स्वाभाविक है। विश्व प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक क्रो एवं क्रो के अनुसार "शिक्षा व्यक्तिकरण एवं समाजीकरण की वह प्रक्रिया है, जो व्यक्ति की व्यक्तिगत उन्नति तथा समाजोपयोगिता को बढ़ावा देती है।" इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा सिर्फ व्यक्ति के लिए उपयोगी नहीं, वरन् सम्मान के लिए भी उपयोगी है। वह व्यक्ति की व्यक्तिगत उन्नति करके शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर, आईएएस आदि बनाती है, किंतु समाज में ऐसे व्यक्तित्व के लोग सामाजिक दशा एवं दिशा निर्धारण करते हैं। इस प्रकार समाज में शिक्षा की उपयोगिता अप्रतीम है, लेकिन असामाजिक तत्वों द्वारा शिक्षा का विघटित स्वरूप भावी समाज के लिए चिंताजनक है।

शिक्षा और समाज एक–दूसरे के पूरक हैं। विद्यालयों की स्थापना समाज द्वारा देश कालएवं परिस्थिति के अनुसार करता है। समाज शिक्षा के सबलीकरण के लिए सामाजिक अंतःसंबंधों एवं अंतःक्रियाओं का अध्ययन करता है। सामाजिक कौशल के प्रत्ययदाता अमेरिकी प्रयोजनवादी दार्शनिक जॉन डीवी ने सामाजिक शिक्षा को प्रमुख स्थान देते हुए विद्यालय को समाज का लघुरूप कहा है। सामाजिक दृष्टिकोण से शिक्षा का अर्थ, शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षण–विधियां, शिक्षक–छात्र के मध्य संबंध आदि सामाजिक प्रगति एवं विकास के लिए सुनियोजित किए गए हैं। समाज में शिक्षा के फायदे पर जोरदार वकालत होती है, किंतु इसके कई पहलुओं पर नकारात्मक प्रभाव देखा जाता है जिसका संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है–

1. शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का साधन है। शारीरिक, बौद्धिक एवं चारित्रिक विकास करती है, किंतु यह देखा जा रहा है तीव्र बौद्धिक योग्य व्यक्ति असमाजीकृत व्यवहार करता है। सामान्य व्यक्ति या कम पढ़ा–लिखा व्यक्ति अपेक्षाकृत अधिक नैतिक, उदार, सहन, सरल और मनोशारीरिक रूप से स्वस्थ होता है।

2. शिक्षा ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक क्षमता का विकास करती है। समाज के बदलते शैक्षणिक स्वरूप ने शिक्षा को विनियोग बना दिया है। अभिभावक नर्सरी–एलकेजी से ही बच्चे को इंजीनियर, डॉक्टर, बैरिस्टर बनाने के सपने बुनने लगते हैं, जिसका परिणाम होता है कि स्वाभाविक विकास प्रक्रिया बाधित होती है।

3. शिक्षा समाज के प्रत्येक सदस्य को रचनात्मक एवं सृजनात्मक बनाने का प्रयत्न करती है। सृजनशील व्यक्ति समाज के लिए अपना योगदान सीमित कर देता है जबकि इनकी भावी समाज को बहुत आवश्यकता होती है।

4. शिक्षा में आधुनिक उत्तेजक साधनों जैसे–मोबाइल, कंप्यूटर, टीवी, रेडियो आदि का असीमित प्रयोग हो रहा है। यह वैज्ञानिक आविष्कार शैक्षिक सामाजिक उन्नति के लिए किये गए, किंतु इक्कीसवीं सदी में इसका बहुतायत उपयोग असामाजिक कुंठा पैदा किया है। व्यक्ति के लिए व्यक्ति नहीं मशीन उपयोग हो गई है।

5. शिक्षा नकारात्मक समाजीकरण को प्रतिबंधित करती है। शिक्षा समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहार को करने की अनुशंसा करती है। समाज के वर्तमान स्वरूप में अनैतिक ढंग से प्राप्त अधिकार, सम्मान एवं उपाधि को प्रमुखता देते देखा जा सकता है।

6. शिक्षा को समाज के लिए सक्षम नागरिक का निर्माण करना चाहिए। वर्तमान शैक्षिक–सामाजिक परिवेश का अवलोकन करने से पता चल जाता है कि सामान्य शिक्षा व्यवस्था की तुलना में छद्म शिक्षा व्यवस्था का बोलबाला है।

7. शिक्षा सामाजिक पुनर्संरचना करने में सहायक होती है। समाज को नया रूप–रंग, आकार–प्रकार प्रदान दिशा देती है कि शैक्षिक उन्नयन में सामाजिक प्रतिनिधि, नेतृत्वकर्ता, शिक्षक समाज, समाजसेवी वर्ग लकीर के फकीर साबित हुए तथा मुख्य उत्तरदायित्व निर्वहन से विमुख हो गए हैं।

8. शिक्षा ज्ञान के विकास, ज्ञान के संचय एवं ज्ञान के स्थानांतरण के लिए अतिआवश्यक है। समाज की उपयोगिता पूर्व ज्ञान का स्थानांतरण कर सामाजिक ढांचे को मजबूत आधार प्रदान करने के लिए है। किंतु दकियानुसी विचार आत्मरक्षित क्रियायें, संकुचित विचार की शिक्षा कमजोर करती है।

9. शिक्षा संबंध स्थापित करना एवं जीवंत रखना सीखाती है। समाज का आधार संबंध है, किंतु आज भौतिक एवं कार्यात्मक संबंध की तुलना में सामाजिक संबंध कमजोर हुआ है, जिस कारण समाज में शिक्षा के परिणाम अनिश्चित प्रकृति का हो गया है।

10. शिक्षा स्थानीय समाज की आवश्यकता के अनुसार होनी चाहिए। सामाजिक जीवन शैली को सहज, सरल एवं सरल बनाने का कार्य करना चाहिए। किंतु अवसर पढ़े–लिखे समाज में सहजता, कठोरता एवं छिन्दावेषण बढ़ गया है।

11. शिक्षा सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए होनी चाहिए। समाज में शिक्षा का संबंध उपभोग की दृष्टिकोण किया जाता रहा है, जिससे सामाजिक जीवन संतोषप्रद, सुखद एवं आनंददायी बने। किंतु बदली परिस्थिति ठीक इसके विपरीत है।

12. शिक्षा पुनर्समाजीकरण का कार्य करती है। जीवन पर्यंत व्यक्ति जरूरत के अनुसार क्रिया एवं व्यवहार में बदलाव करता है। समाज के सदस्य उपयोगिता के आधार मार्गदर्शन करते हैं। लेकिन वर्तमान समाज में सामाजिक मार्गदर्शन मृतप्राय हो गया है।
13. शिक्षा रीति–रिवाजों, प्रथाओं, परंपराओं, जनरीतियों, रूढ़ियों, लोकचार से जुड़ी रही है। जो कि समाज की देन है। समाज में रेखीय परिवर्तन की तुलना में चक्रीय परिवर्तन अधिक होता है। वर्तमान भौतिकवादी युग में रेखीय परिवर्तन पर विश्वास बढ़ गया है।
14. शिक्षा शिक्षक केंद्रित से अब छात्र केंद्रित हो गई है। समाज अपने ढांचागत स्वरूप को बनाये हुए है। सामाजिक शिक्षा प्रदान करते समय व्यक्तिगत क्षमता एवं कौशल माध्यम रखना चाहिए।
15. शिक्षा एक प्रमुख सामाजिक पद्धति– समाजनीति का प्रयोग सीखने सीखाने में किया है। समाज में इसी पद्धति का प्रयोग व्यक्ति के प्रतिनिधित्व का चयन करने में किया जाता है। शिक्षा और समाज दोनों विधाओं में पारदर्शिता लाना होगा।

उपर्युक्त प्रमुख तथ्यों के माध्यम से समाज में शिक्षा की उपयोगिता के साथ–साथ अनुपयोगी शिक्षा तंत्र के दुष्प्रभावों की समीक्षा की गई है। यूं तो सभी प्रकार शिक्षा उपयोगी ही होती है, किंतु यह चयन करना कठिन होता है कि कौन किस शिक्षा के लिए उपयोगी है। शिक्षाविद् और समाजशास्त्री उलवाही समन्यवय के अनुसार यह सुनिश्चित करने का कार्य कर सकते हैं कि किसे और किस स्थिति में कौन सी शिक्षा प्रदान की जाय, जो देश, काल, परिस्थिति एवं समाज के लिए उचित हो। समाज को नई दिशा दे, शिक्षा को उन्नति दे, व्यक्ति को विवेकवान एवं सामंजस्यपूर्ण बनाए। इस प्रकार शिक्षा और समाज के बीच घनिष्ठ संबंध है। समाज हमेशा प्रगतिशील निर्णय करता है। शिक्षा ऐसे निर्णय में सहायक होती है। शिक्षा और समाज के संबंध को इस कथन से अवलोकित कर के समझा जा सकता है–'शिक्षा और समाज का ज्ञान समझदारी के बिना मूर्खता है, दया के बिना दीवानपन है, व्यवस्था के बिना व्यर्थ है और धर्म के बिना मृत्यु है।' इस प्रकार शिक्षा, समाज के लिए रीढ़ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

डॉ अरविंद कुमार यादव(2022)–"शिक्षाशास्त्र : समग्र अध्ययन, इड्डुनिक पब्लिकेशन (उ.प्र.)
डॉ अरविंद कुमार यादव(2023)–"बाल विकास एवं शिक्षा विज्ञान, जौनपुर (उ.प्र.)
गोपाल कृष्ण (1990–91)–'समाजशास्त्र के सिद्धांत, "आगरा बुक स्टोर आगरा" (उ.प्र.)
डॉ एस.पी. गुप्ता(2001)–"शिक्षा के सैद्धांतिक आधार, शारदा पब्लिकेशन इलाहाबाद (उ.प्र.)
नई शिक्षा नीति 2020 के भारत सरकार द्वारा जारी गजट का आत्मवलोकन (उ.प्र.)
पी. डी. पाठक (2016)–"अधिगम एवं शिक्षण, श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा (उ.प्र.)

Collaborative Learning: Concept and its Benefits

Dr. Umendra Singh

Assistant Professor
Department of Teacher Education
Dharam Samaj College, Aligarh (Uttar Pradesh)
Raja Mahendra Pratap Singh State University, Aligarh (Uttar Pradesh) India
Email: usds1979@gmail.com
Phone: 9411228211, 6398403323

Abstract-

Collaborative learning is a situation in which two or more students work together to learn something. Students make use of one another's abilities and resources during this process. The present article articulates the benefits and importance of peer learning in twenty first century. Today's students would become tomorrow's successful leaders. So, they must develop 21st century collaboration skills. Collaborative learning is the most efficient way to help students to attain these skills. Methods and approaches are changing day by day according to learners' need in the field of teaching. Nowadays collaborative learning approach is of increasing interest to teachers. Collaborative learning can occur in the contemporary discussions of a small group, problem-solving activities, and face-to-face & virtual game settings. Collaborative learning through games aims at developing collaborative skills, while also maintaining the individuality of learners. The target of collaborative learning is shifting from a mere teacher-student interaction to the role of peer relationship and implies learner-centred instruction. This paper tries to highlight the concepts, principles, theories and benefits of collaborating learning in detail.

Keywords: Collaborative Learning, Concepts, Benefits

Peer learning is a collection of instructional techniques. Students engage in peer learning interactions with each other to accomplish educational objectives. In this learning process, both teachers and students are expected to take an active part. According to the notion that "Students learn a great deal by explaining their ideas to others and by participating in activities in which they can learn from their peers" (Boud, 2001).

Peer learning is when students work together as co-learners to learn from and with one another. This approach to teaching is used by instructors who take an active role in their students' education. Scotsman Andrew Bell introduced the theory of peer learning in 1975. Over the last 3-4 decades, it has become the most important teaching-learning method.

The Benefits of Peer LearningPeer learning has following benefits for learners-

- Peer learning enhances comprehension. Students explain their ideas with peers and take part in activities where they learn from their peers.
- Peer learning improves interpersonal and collaborative skills. These two skills are never stopped mattering. Collaborative attitude is specifically important if we want to thrive and survive in today's workplace. Peer learning is an activity which permits us to practice these two skills.
- Peer learning improves organizational skills which are being developed in students during the course of planning lessons, prioritizing goals, evaluating their own progress and giving and receiving feedback.
- Self-directed learning includes peer learning. It inspires and encourages students to take charge of their education.
- Peer learning improves critical reflection, critical thinking and problem-solving skills.

Thus, peer learning is very effective because it assigns an active role to the students. They are no longer the silent viewers in the classroom. Peer learning provides opportunities to the students to prepare for discussion, to form their own ideas and to teach each-others. Collaborative Learning Collaborative learning is a type of active learning that encompasses terms such as cooperative learning, team-based learning, group learning and peer learning. Collaboration is an interactional philosophy and way of life where people take ownership of their actions, including absorbing and building on the skills and contributions of their peers. It implies a method of interacting with people that values and emphasizes the skills and contributions of each individual group member in all circumstances when individuals are gathered in groups. The group members assume responsibility for the actions of the group and share authority. Collaborative learning's fundamental tenet is consensus building through group cooperation as opposed to competition in which individuals outperform other group members. Practitioners of CL use this concept to leave with and for their students in the classroom, in committee meetings, with community groups, in their families, and generally.

Generally, teachers use two kinds of teaching techniques in the classroom-group work and individual work. Hussain and Sultan (2010) affirmed, "the effective learning to be an interactive process involving learners in different activities for accomplish their academic tasks. They work on activities individually as well as in small groups to complete assigned task with mutual cooperation." The learning which takes place in small groups of learners by assuming activities and helping each other is referred as collaborative learning.

Dillenbourg (1999) defined collaborative learning as a situation occurs when two or more students work together to learn something. Students make use of one another's abilities and resources during this process.

MacGregor, 1990 states about collaborative learning that it is a method of instruction that has students' groups work together to solve a problem, finish a goal, or create a product.

Collaborative learning helps students to learn themselves independently. The foundation of education is formed by the teaching-learning process and we can achieve the efficiency of this

process only through activity, independence, self-discipline and responsibility of learners. Self directed learning has the important role in today's education. The emphasis is shifted to selfdirected work as an instrument to shape the professional activities of the students.

Principles of Collaborative Learning

The premise of collaborative learning is that knowledge is a social construct. There are four

principles of collaborative learning which are following-

- The learner or student is the primary focus of instruction.
- Interaction and doing are of primary importance.
- Working in groups is an important mode of learning.
- Structured approaches to developing solutions to real world problems should be incorporated into learning.

Theories of Collaboration Learning

The theory of collaboration learning suggests that students are being helped by learning in groups to develop their capacity for abstract thought, spoken communication, selfmanagement, and leadership. It provides the opportunities to the students to build upon their leadership and organization skills.

The constructivism theory provided the framework for the structure of collaborative learning. This theory holds that students learn through their own experiences, that learning should be active, and that they make sense of the world around them by asking questions, exploring new concepts, and critically assessing their prior knowledge. Students actively participate in the

learning process as opposed to being passive recipients of information others give to them. This learning process is impacted by the context of their encounters. As a result, interpersonal relationships among students help the social process of learning. The constructivism theories of personality, group dynamics, and social cognitive mechanisms deepen educators' interest in

the idea of collaborative learning.

"Constructivism has developed under two logical approaches- cognitive constructivism and social constructionism in its short history with the influence of both philosophy and psychology till it reached its present stage of development. Jean Piaget (1972) and Bruner (1990) represent the cognitive constructivism strand

while Vygotsky (1978) represents the social constructivism. The theory underpinning collaborative learning is that of constructivism where each student learns by integrating new understanding from their experiences and ideas to build upon their existing knowledge (Piaget, 1972), where group of students come together to share experiences, ideas and understandings toward reaching a learning goal or to solve a problem then this is termed social constructivism (Vygotsky, 1978). Thus, cognitive constructivism mainly focuses on the individual's cognitive construction of mental structures and it is the view of the social constructivism that the learner uses social interaction and cultural practices in the construction of knowledge.

The 4c Learning Model

Constructivist and collaborative (socio culturalism) perspectives emphasize the importance of students' participations in learning activities. The integration of constructivist-collaborative views considers that knowledge is constructed from the process of active individual formation and the inculturation process through social interaction. In this way, the 4c (Constructive,

Critical, Creative and Collaborative) learning model is formed. The 4c learning model has a characteristic in which knowledge is constructed by students who are active collaborative groups. The constructivist-collaborative learning has the concepts of schemata, assimilation, accommodation, cognitive imbalance, Zone of proximal development and scaffolding. 4C learning model requires students to learn through discussions and dialogues. The discussion and dialogue activities in 4c model can reduce the gap between the students who have high achievements and those who have low achievement. The 4c model requires the lecturers to view the class as a learning community. The students in the class are not only active in learning facts, but are also active in practicing inquiry skill such as presenting explanations, description, and predictions; controlling natural objects and events. The ideal learning community encourages students to learn from various sources including textbooks, lecturers, and the communication results between them and their lecturers.

Vygotsky (1978) recognizes "learning always occurs and cannot be separated from a social context. Consequently, instructional strategies that promote the distribution of expert knowledge where students collaboratively work together to conduct research, share their results and perform or produce a final project and help to create a collaborative community of learners. Knowledge construction occurs within social context that involves student-student and expertstudent collaboration on real world problems or tasks that build on each person's language, skills and experience shaped by each individual's culture."

According to Van Hecke et al., 2013, "there are following shifts in the role of students in the application of collaborative learning -

1. From listeners, observers and note-takers to active problem solvers, providing input and like discussions
2. from class preparation with low or moderate expectations to class preparation with high expectations
3. From a private presence with little risk to a public presence with many risks and problems 4. from personal choice to group choice in accordance with the expectations of the community
4. From peer-to-peer competition to peer-to-peer collaboration
5. From responsibility and independent learning to group responsibility and learning interdependence
6. Previously teachers and texts as the main source of authority and sources of knowledge, now teachers and texts are not the only source of learning."

Morton Deutsch (1949) propounded another concept that the theory of cooperation and competition played a role in the creation of the concept of collaborative learning. The theory, which is based on human psychology, examines how cooperation affects a group's ability to function. It asserts that the aim, or interdependent goal, should be shared by every member of

the group as the most crucial element in cooperation.

For the cooperation to be successful, all individuals should carry out the following:

i) Locomotion (movement in an objective social space, e.g., progress of the psychological attitude in a problem-solving situation)

ii) Facilitating locomotion of other members

iii) Gaining attraction of the members through contribution of mental or emotional energy towards the goal (positive cathexis)

iv) Positively influence others and therefore the outcome (positive inducibility).

Thus, we find that cooperation not only helps to achieve the common goals, but also is instrumental in the enhancement of positive attributes in an individual. Cooperative learning is another option to competitive learning or individualistic learning. In an ideal classroom that employs the cooperative learning method, all learners will learn not only working autonomously on their own but also working cooperatively with others and competing for enjoyment.

Process of Collaborative learning

Understanding how learning occurs is necessary before discussing collaborative learning. Smith and MacGregor (1992 defined the process of collaborative learning as follows:

- As they study, pupils assimilate new knowledge and tie it to a base of earlier understanding.

- In order for a learner to actively engage with their peers and analyse and synthesise material rather than just memorise it. Active learning needs a stimulus or challenge.
- Learning occurs when students are exposed to various points of view from individuals with various backgrounds.
- Learning is accelerated in a social setting where students converse with one another. In this setting, the learner gives the discourse a structure and meaning.

According to Smith and MacGregor (1992), "the collaborative learning environment, learners receive a stimulus to engage and converse with their peers. They are exposed to different viewpoints. In such an environment, learners begin to create their own learning frameworks rather than relying solely on what has been told to them by the teacher or what is written in the textbooks." Thus, in a collaborative learning setting, learners can talk with peers, share ideas, exchange different beliefs, question other conceptual frameworks, and be actively engaged.

Collaborative Learning in Large Groups, Small Groups and Teams

Large group activities are most often led by a teacher and can be used to break up didactic content delivery with learning activities that consolidate and test knowledge as it is developed. Modern large classrooms increasingly incorporate flexible seating arrangements that can facilitate small breakout group activities.

Small group activities can occur in any space where a manageable number of cooperative groups can be implemented with appropriate supportive resources, space and technology. Informal cooperative learning groups are often ad-hoc grouping of two or four students convened to address a question raised by the teacher.

Team-based learning is distinguished from small group learning in that a student team works on a given project or problem that may span one to many classes during a teaching period. Such teams are often formally convened by the teacher, based on strengths and abilities rather than friendships as is seen in informal or impromptu groups (Johnson, et al, 2014).

Benefits of collaborative learning-

"A meta-analysis from the cooperative learning centre at the University of Minnesota concluded that having students work collaboratively has significantly more impact on learning than having students work alone" (Johnson et al, 1981). An analysis of 122 studies on collaborative learning showed-

- More learners learn more material working together, talk through the material with each other and make sure that all group learners understand than when students compete with one another or work alone individualistically.
- More students are motivated to learn the material when they work together than when students compete with one another or work alone individualistically.

- Students have more positive attitudes when they work together than when students compete with one another or work alone individualistically.
- Students are more positive about the subject being studied, the teacher and themselves as learners in that class and are more accepting of each other (male or female, handicapped or not, bright or struggling or from ethnic backgrounds) when they work together.

Laal & Ghodsi, 2012 summarize the main benefits of collaborative into four categories which are based on the work of Johnson,1989 and Panitz,1999.

Psychological Benefits-

- Learner-centred instruction boosts students' self-respect.
- Collaboration lowers anxiety.
- Collaborative learning helps students establish a positive attitude towards teachers.

Social Benefits-

- Students are given a social support system.
- Collaborative learning is beneficial for creating a solid understanding between students and staff.
- A welcoming environment is created for teaching and imitating cooperation.
- Learning communities are developed through collaborative learning.

Academic Benefits-

- The improvement of critical reasoning skills.
- Students participate actively in their education.
- Results in the classroom are improved through collaborative learning.
- Model-appropriate learner problem solving techniques include collaborative learning.
- Collaborative learning makes the lengthy lectures more intimate.
- Collaborative learning inspires students to pursue a certain subject.

Assessment Benefits-

- In collaborative learning, the methods for assessing students and teachers are switched.
- Different types of assessments are used in collaborative learning.

Collaborative learning provides opportunities for peer teaching, coaching and control because few students dare to ask questions from their teachers in the classroom. However, they can ask different questions from each other in small groups during joint activities. They can even clarify their queries and all the uncertainties. Collaborative learning develops the independent

opinions in students and builds the confidence to do arguments to support their

opinions. Communicative competence is increased through collaborative learning in students to communicate with each other and their teachers. It also enhances cognitive activities, independence, creativity, self-discipline and responsibility.

If collaborative learning method is designed in such a way that students are interdependent and work as a team to achieve the desired goals, it results in desirable learning outcomes such as skills of critical thinking, precise writing, clear argumentation and competency in oral presentations. Thus, the specific pedagogical benefits of collaborative learning include improvement of critical thinking skills, co-creation of knowledge and meaning, reflection, and transformative learning. Other benefits include the development of interpersonal skills and organizational skills.

References-

Boud, D. (2001). Introduction: Making the Move to Peer Learning. In Boud, D., Cohen, Ruth & Sampson, Jane (Ed.). Peer Learning in Higher Education: Learning from & with Each Other. London: Kogen Page Ltd. Retrieved from: Brownstein https://www.museumplanner.org

Dillenbourg, P. (1999). What do you mean by collaborative learning? Collaborative-learning: Cognitive and Computational Approaches, 1-19

Johnson, D. W., Johnson, R. T. & Smith, K. A. (2014). Cooperating Learning Improving University Instruction by Basing Practice on Validated Theory. Journal on Excellence in College Teaching, Vol. 25(4). pp. 85-118.

Johnson, D. W., Maruyama, G., Johnson, R. T., Nelson, D. & Skon, L. (1981). Effects of Cooperative, Competitive and Individualistically Goal Structures on Achievement: A Meta-analysis. Psychological Bulletin. Vol. 89(1). pp. 47-62.

Laal, M. & Ghodsi, S. M. (2012). Benefits of Collaborative Learning, Procedia- Social and Behavioural Sciences 31. pp 486-490. Elsevier Publishing.

Smith, B. L. & MacGregor, J. T. (1992). Collaborative Learning: A Sourcebook for Higher Education. University Park, PA: National Centre on Postsecondary Teaching Learning and Assessment (NCTLA). pp 9-22.

Van Hecke, O., Torrance, N., & Smith, B. H. (2013). Chronic Pain Epidemiology and its Clinical Relevance. British Journal of Anaesthesia. Vol-111(1). pp. 13–18.

Vygotsky, L. S. (1978). Mind in Society: The Development of Higher Psychological Processes. Cambridge, MA: Harvard University Press.

Unlocking the Potential : The Future of AI in Education

Fauzia Khanam
Assistant Professor, B.Ed. Department
Swami Dharmabandhu College of Education, Hazaribagh, Jharkhand
Email :
Mob.: 7765038629

Abstract:

The integration of Artificial Intelligence (AI) into education holds significant promise for transforming teaching and learning practices. This article provides an overview of the potential implications of AI in education, focusing on personalized learning, accessibility, empowerment of educators, ethical considerations, and challenges.AI offers the opportunity to personalize learning experiences for students by analyzing individual learning patterns and preferences. Through adaptive learning platforms and intelligent tutoring systems, students can receive tailored instruction that maximizes engagement and learning outcomes. Additionally, AI-driven educational tools have the potential to break down barriers to access and inclusion in education. By providing affordable, scalable, and accessible learning solutions, AI empowers students to overcome geographical, socioeconomic, and resource-related challenges.

Furthermore, AI can empower educators by automating routine tasks such as grading assignments and generating progress reports. This frees up valuable time for teachers to focus on fostering critical thinking, creativity, and collaboration skills among their students. Moreover, AI-driven analytics and insights provide educators with valuable data-driven insights into student performance and progress, enabling them to make informed decisions about teaching strategies and interventions. However, the integration of AI in education also raises ethical considerations and challenges. Ensuring the ethical use of student data and protecting privacy is paramount. Additionally, mitigating algorithmic bias and ensuring that AI complements rather than replaces human educators are critical considerations.

Keywords: Implication, Personalised, Accessibility, Ethical, Platforms, Tailored, Affordable, Driven, Scalable

Introduction:

AI holds the potential to break down longstanding barriers to access and inclusion in education that have plagued learners worldwide. In many parts of the world, students grapple with challenges such as limited resources, geographical

constraints, and socioeconomic disparities that impede their access to quality education. AI-powered educational tools offer a beacon of hope by providing affordable, accessible, and scalable learning solutions. Whether through AI-driven chatbots offering personalized support or adaptive learning platforms accommodating diverse learning needs, AI has the power to democratize education and ensure that learning opportunities are available to all, irrespective of geographical location or socioeconomic status.

Yet, the transformative potential of AI extends beyond the realm of student experiences to encompass the empowerment of educators themselves. By automating routine tasks such as grading assignments and generating progress reports, AI liberates valuable time and resources for teachers to focus on what truly matters: fostering critical thinking, creativity, and collaboration skills among their students. Moreover, AI-driven analytics provide educators with invaluable data-driven insights into student performance and progress, enabling them to identify areas for improvement, tailor instructional strategies, and provide targeted interventions to support struggling learners.

In the ever-evolving landscape of education, one of the most intriguing developments is the integration of Artificial Intelligence (AI). This transformative technology has the potential to revolutionize how we teach and learn, opening doors to new opportunities and possibilities. As we peer into the future, it becomes clear that AI will play a pivotal role in shaping the educational experiences of tomorrow.

Understanding AI in Education

Before we delve into the future implications, let's first understand what AI in education entails. Artificial Intelligence refers to the simulation of human intelligence processes by machines, particularly computer systems. In the context of education, AI encompasses a wide range of applications, from personalized learning platforms to intelligent tutoring systems and automated grading tools.

The Promise of Personalized Learning

One of the most exciting prospects of AI in education is its ability to personalize learning experiences for students. Imagine a classroom where each student receives tailored instruction based on their unique learning styles, preferences, and abilities. AI algorithms can analyze vast amounts of data to identify individual learning patterns, allowing educators to design customized learning pathways that cater to each student's needs. Personalized learning not only maximizes student engagement and motivation but also enhances learning outcomes. By providing targeted support and feedback, AI-powered educational

platforms empower students to take ownership of their learning journey, fostering a deeper understanding of the subject matter.

Breaking Down Barriers to Access

In addition to personalized learning, AI has the potential to break down barriers to access and inclusion in education. In many parts of the world, students face challenges such as limited resources, geographical barriers, and socioeconomic disparities that hinder their ability to access quality education. AI-powered educational tools can help bridge these gaps by providing affordable, accessible, and scalable learning solutions. For example, AI-driven chatbots and virtual tutors can offer personalized support to students outside the traditional classroom setting, ensuring that learning opportunities are available 24/7. Likewise, adaptive learning platforms can adapt to students' pace and progress, accommodating diverse learning needs and abilities.

Empowering Educators

While AI holds tremendous promise for enhancing student learning experiences, it also has the potential to empower educators in meaningful ways. By automating routine tasks such as grading assignments and generating progress reports, AI frees up valuable time and resources for teachers to focus on what truly matters: fostering critical thinking, creativity, and collaboration skills among their students. Moreover, AI-driven analytics and insights provide educators with valuable data-driven insights into student performance and progress. By leveraging this data, teachers can identify areas for improvement, tailor instructional strategies, and provide targeted interventions to support struggling students.

Ethical Considerations and Challenges

As we embrace the potential of AI in education, it is crucial to acknowledge and address ethical considerations and potential challenges. One of the primary concerns is the ethical use of student data and privacy protection. Educational institutions and technology providers must adhere to strict guidelines and regulations to ensure that sensitive student information is handled responsibly and securely. Furthermore, there is a risk of algorithmic bias in AI-driven educational systems, where underlying biases in the data used to train AI algorithms can lead to unfair treatment or discrimination against certain groups of students. It is imperative to mitigate these biases through careful algorithm design, data collection, and validation processes.

In the modern world, the integration of Artificial Intelligence (AI) into various aspects of our lives is becoming increasingly prevalent. Among its many applications, AI holds tremendous promise in revolutionizing the field of education.

However, like any powerful tool, it comes with both positive and negative implications. Now we'll delve into the future of AI in education, exploring its potential benefits and pitfalls.

Positive Impacts of AI in Education:

Personalized Learning: One of the most significant advantages of AI in education is its ability to personalize learning experiences for students. AI algorithms can analyze students' learning patterns, preferences, and strengths, allowing educators to tailor lessons accordingly. This personalized approach ensures that each student receives instruction at their own pace and level, maximizing their learning potential.

Enhanced Engagement: AI-powered educational tools often utilize interactive technologies such as virtual reality (VR) and gamification to make learning more engaging and immersive. By incorporating elements of play and exploration, AI helps capture students' interest and attention, fostering a deeper understanding of the subject matter.

24/7 Availability: Unlike human teachers, AI tutors are available round-the-clock, providing students with instant access to learning resources and support whenever they need it. This accessibility is particularly beneficial for students facing geographical or socioeconomic barriers to education, ensuring that no one is left behind.

Data-Driven Insights: AI algorithms can analyze vast amounts of educational data to identify trends, patterns, and areas for improvement. By leveraging this data, educators can gain valuable insights into students' progress and performance, enabling them to make more informed decisions about teaching strategies and interventions.

Efficiency and Cost-Effectiveness: Automating routine tasks such as grading assessments and generating personalized learning plans can significantly reduce the administrative burden on teachers, allowing them to focus more on teaching and mentoring students. Additionally, AI-driven educational solutions can often be more cost-effective than traditional methods, making quality education more accessible to all.

Negative Impacts of AI in Education:

Digital Divide: Despite its potential benefits, the integration of AI in education risks widening the digital divide between students who have access to advanced technologies and those who do not. Disparities in access to devices, internet connectivity, and digital literacy skills could exacerbate existing inequalities in educational outcomes.

Loss of Human Connection: While AI can simulate certain aspects of human interaction, it cannot fully replace the human connection between teachers and students. Over-reliance on AI-driven educational tools may lead to a loss of empathy, creativity, and critical thinking skills that are nurtured through face-to-face interactions with educators and peers. Imagine a scenario in which a student is struggling with a complex concept in mathematics. Traditionally, they would seek assistance from their teacher during a face-to-face interaction. In this interaction, the teacher not only provides explanations and clarifications but also offers encouragement, empathy, and personalized support tailored to the student's specific needs and learning style. Through this exchange, the teacher builds a rapport with the student, fostering a sense of trust and connection that goes beyond academic assistance.

Now, let's contrast this scenario with one where the student relies solely on an AI-powered tutoring system to address their difficulties in understanding the mathematical concept. While the AI system may offer accurate explanations and adaptive learning pathways based on the student's responses, it lacks the human touch and empathetic understanding that a teacher provides. The AI system may not recognize the student's frustration or emotional state, nor can it offer words of encouragement or personalized support in the same way a human teacher can.

As a result, the student's learning experience becomes transactional rather than relational. They miss out on the emotional support, encouragement, and mentorship that human teachers offer, which are essential for nurturing empathy, creativity, and critical thinking skills. Without the human connection fostered through face-to-face interactions with educators and peers, students may feel isolated, disengaged, and less motivated to learn.

Algorithmic Bias: AI algorithms are only as unbiased as the data they are trained on. Without careful oversight, these algorithms may perpetuate and exacerbate existing biases present in educational systems, such as racial, gender, or socioeconomic biases. This could result in unfair treatment or opportunities being denied to certain groups of students.

Privacy Concerns: The widespread adoption of AI in education raises significant concerns about student privacy and data security. Educational institutions and technology companies must ensure that sensitive student data is handled responsibly and protected from misuse or unauthorized access.

Dependence on Technology: As AI becomes increasingly integrated into educational systems, there is a risk of students becoming overly dependent on technology for learning. This dependence could hinder the development of essential

skills such as critical thinking, problem-solving, and effective communication, which are not always fostered by AI-driven educational tools. Imagine a classroom where AI-driven educational tools are extensively utilized to deliver instruction and assess student progress. Students rely heavily on these tools for accessing learning materials, completing assignments, and receiving feedback. The AI algorithms behind these tools are designed to provide personalized learning experiences, adaptive assessments, and targeted interventions based on student performance data. Now, let's consider a specific scenario within this classroom. A group of students is presented with a complex problem-solving task in mathematics. Rather than grappling with the problem independently or engaging in collaborative discussions with their peers, the students immediately turn to AI-powered tutoring systems or problem-solving applications for assistance.

These AI-driven tools may offer step-by-step solutions or algorithmic approaches to solving the problem. While this guidance may be helpful in arriving at the correct answer, it bypasses the critical thinking, reasoning, and problem-solving skills that students develop through independent inquiry and exploration. Moreover, by relying solely on technology for solutions, students miss out on the opportunity to engage in meaningful discussions, exchange ideas, and learn from their peers' perspectives. Furthermore, the nature of AI-driven educational tools may encourage a passive learning approach, where students passively consume information rather than actively engaging with it. For example, AI-powered adaptive learning platforms may present content in a predetermined sequence based on students' performance data, limiting their autonomy and agency in directing their learning journey. As a result, students may become accustomed to seeking quick answers and solutions from technology without investing the effort or thought required to develop deep conceptual understanding or problem-solving skills. This overreliance on technology could hinder their ability to think critically, analyze information, and communicate effectively, which are essential skills for success in the real world.

Conclusion:

There is a need to ensure that AI does not replace human educators but rather complements their expertise and enhances their teaching practices. While AI can automate certain tasks and provide personalized support, human teachers play a critical role in fostering social-emotional skills, empathy, and interpersonal connections with their students. As we look ahead to the future of AI in education, the possibilities are boundless. From personalized learning experiences to enhanced accessibility and empowerment of educators, AI has the potential to transform education on a global scale. However, realizing this potential requires a

collaborative effort from all stakeholders – educators, policymakers, technology providers, and students – to ensure that AI is used responsibly, ethically, and inclusively.

The future of AI in education holds immense promise for transforming teaching and learning in profound ways. From personalized learning experiences to data-driven insights, AI has the potential to revolutionize education and unlock opportunities for students worldwide. However, it is essential to approach this transformation thoughtfully, addressing potential challenges such as the digital divide, algorithmic bias, and privacy concerns. By harnessing the power of AI responsibly and ethically, we can create a more inclusive, equitable, and innovative educational landscape for future generations to thrive in.

References:

Akgun, S., Greenhow, C. (2022). Artificial intelligence in education: Addressing ethical challenges in K-12 settings. AI Ethics, 2, 431–440. https://doi.org/10.1007/s43681-021-00096-7.

Boden, M.A. (2018). Artificial intelligence: A very short introduction. Oxford. ISBN: 978-0199602919

Borenstein J. and Howard A.,2021, "Emerging challenges in AI and the need for AI ethics education," AI Ethics, vol. 1, no. 1, pp. 61–65, doi: 10.1007/s43681-020-00002-7.

Bryant, J., Heitz,C., Sanghvi, S., & Wagle, D. (2020, January 14). How artificial intelligence will impact K-12 teachers. McKinsey. https://www.mckinsey.com/industries/education/our-insights/how-artificial-intelligence-will-impact-k-12-teachers

Celik, I., Dindar, M., Muukkonen, H. & Järvelä, S. (2022). The promises and challenges of artificial intelligence for teachers: A systematic review of research. TechTrends, 66, 616–630. https://doi.org/10.1007/s11528-022-00715-y

Gardner, J., O'Leary, M. & Yuan, L. (2021). Artificial intelligence in educational assessment: "Breakthrough? Or buncombe and ballyhoo?" Journal of Computer Assisted Learning, 37(5),1207–1216. https://doi.org/10.1111/jcal.12577

Giattino, C. & Rosser, M. (2023). AI Timelines: What Do Experts in Artificial Intelligence Expect in the Future.Our World in Data. https://ourworldindata.org/artificial-intelligence

Goldman Sachs. (2023). The Potentially Large Effects of Artificial Intelligence on Economic Growth. GS Publishing The Potentially Large Effects of Artificial Intelligence on Economic Growth (Briggs/ Kodnani) (gspublishing.com)

Holmes, W. & Porayska-Pomsta, K. (Eds.) (2022). The ethics of artificial intelligence in education. Routledge. ISBN 978-0367349721

Kumar K. and Thakur G. S. M., 2012 "Advanced Applications of Neural Networks and Artificial Intelligence: A Review," Int. J. Inf. Technol. Comput. Sci., vol. 4, no. 6, pp. 57–68, doi: 10.5815/ijitcs.2012.06.08.

M. A. and Tan T. K., 2020, "Artificial intelligence and sustainable development," Int. J. Manag. Educ., vol. 18, no. 1, p. 100330, doi: https://doi.org/10.1016/j.ijme.2019.100330.

Raja R. and Nagasubramani P. C., 2018 ,"Impact of modern technology in education," J. Appl. Adv. Res., pp. S33–S35, , doi: 10.21839/jaar.2018.v3is1.165.

Zappone F., “Using Technology in Education-Steps to the Future,”1991, Comput. Sch., vol. 8, no. 1–3, pp. 83–88, doi: 10.1300/J025v08n01_08.

Zhang, H., Lee, I., Ali, S., DiPaola, D., Cheng, Y., & Breazeal, C. (2022). Integrating ethics and career futures with technical learning to promote AI literacy for middle school students: An exploratory study. International Journal of Artificial Intelligence in Education, 1–35. https://doi.org/10.1007/s40593-022-00293-3